बर्ष.11 मासिक पत्रिका अंक.12 दिसम्बर

एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा

हे परमेश्वर तू सच्चा है और तेरा नाम सच्चा है ।

मुक्ति का रास्ता

एक प्रति का मूल्य 15 रूपये तथा वार्षिक 180 रूपये ।

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालों ने अपने चरणों में बैठे देवतुल्य अपने अनुयाइयों से कहा–

ब्रह्माद्या स्थावरान्ताश्च पशव: परिकीर्तिता:।
पशूनामेव सर्वेषां प्रोक्तमेवतन्न दर्शनम्॥

ब्रह्मा से लेकर तृण तक सभी पशु कहलाते हैं, क्योंकि ये सब माया के पाश से बंधे रहते हैं पुरख परमात्मा इनका एक मात्र स्वामी है ।अगर तुम जनम मरण के दुख बन्धनो से मुक्ति चाहते हो तो पुण्यकरम करते हुए पूरण गुरू की सेवा करते हुए उस सनातन पुरूष परमेश्वर का तप करो ।

तपोमार्ग में मनुष्यों के लिये वही निषिद्ध है जो उन्हें रूचिकर लगता है वह नहीं कि जिससे वह घ्रणा करते हैं ....!

सम्पादक-सोहंग देवता
फोन–9412493683,
8273078122

स्वामी - सतपुरुष बाबा फुलसन्दे वालों के लिये, मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक - सोहंग देवता ने आकाश प्रैस 1/2080, ओखला दिल्ली से मुद्रित कराकर गुरु गद्दी दरबार फुलसन्दा, नहटौर कोतवाली रोड, जिला–बिजनौर (उ.प्र.) से प्रकाशित किया । कम्प्यूटर डिजाइन–फुलसन्दा, फोटो ग्राफी–नीरज वितरण–वरुणदेवता, रणबीर गरूड़, चरणारविन्दम्
RNI.No.UPHIN/2000/772 - दूरभाष.-9412493683
Postal Reg. No.UP/BJR-18/2009/2011

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालों का हस्तलिखित संदेश –

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले

एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा

- गुरु के भीतर, तुम ईश्वर की ज्योति को खोजो। तुम देखोगे कि आकाश में जैसे असंख्य सितारे हैं ऐसे ही तुम भी उन सितारों में से एक हो।
- पानी सुराही का हो या दरया का उसका स्रोत तो नहीं बदल जाता, दरया में कश्ती चलती है पर सुराही के पानी में कश्ती नहीं चल सकती, सुराही उठाओ दरया में पलट दो, खुद को उठाओ सच्चे गुरु में पलट दो, तुम देखोगे कि तुम अनायास परमात्मा में जागिर हो। पर हर गुरु सच्चा गुरु नहीं। परमेश्वर इस जनम में अगर तुम्हें अपने द्वार पर बुलाना चाहता है तो गुरु को अवश्य तुम्हारे द्वार पर भेज देगा।
- तुम्हारी आत्मा तुम्हारी देह की कब्र में दफ़न है जब गुरु आवाज़ देंगे तब ये खुद उनसे मिलने, अपने रब से मिलने उठी चली जावेगी, सिद्ध आत्माओं को मोहित करने को लिये सच्चे गुरु की पुकार काफ़ी है।

सतपुरूष बाबा फुलसन्देवाले

3 दिसम्बर 2011

एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा

हे परमेश्वर ! तू सच्चा है और तेरा नाम सच्चा है

नीस्त हस्ती बजुज यजदान –नहीं है कोई आराध्य सिवा परमेश्वर के ।

मृत्यु के देवता यम सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालों को जब परलोक में ले गये तो वहाँ देवताओं ने उनके मार्ग में पुष्प बिछाये। मृत्युदेव उनको स्वर्ग–नरक, देवताओं, फरिश्तों व पैगम्बरों के स्थानो में ले गये और कहा देखो ये सब उस एक परमेश्वर की आराधना करते हैं। उसी की आराधना तुम पृथ्वी पर जारी कराओ तुम्हारी प्रार्थना पर हम रोज नरक में यातना पाते एक आदमी को बक्श दिया करेंगे। फिर वे उनको परमेश्वर के आलोकित धाम में ले गये जहाँ का हाल सिवा उस परमेश्वर के कोई दूसरा नहीं जानता वहाँ से वापस आते हुए सतपुरूष ने सारे संसार के वास्ते समस्त आत्माओं के वास्ते परमेश्वर से इस तरह से प्रार्थना करी –

हे परमेश्वर ! तू जमीन-आसमान और रूहों का स्वामी है, कौन है जो तेरी बराबरी कर सके, कोई नहीं है, तेरे प्रकाश में देवता और फरिश्ते तेरी आराधना में मस्त हुए झूमते हैं, उस प्रकाश की एक बूँद तू हमें बक्श, हमें अपने करीब कर, हमारा नाम अपनी पवित्र आत्माओं में लिख, हमें अन्धेरे से निकाल कर उजाले और रोशनी में ला, जो बीमार हैं उन पर रहम कर, जो दुःखी लाचार हैं उन पर रहम कर, अपने भले-बुरों पर तू रहम कर, तेरा रहम हम पर होवे, तेरा प्रकाश हमारे साथ हो, हे परमेश्वर ! तू हमें अपनी ज्योति में विश्राम दे, जो तेरे रास्ते पर आये हैं उनके वास्ते अपना रास्ता आसान कर, दुःख-भोग का प्याला हमारे सामने से हटा दे, हे परमेश्वर ! दुःखों के वन में भटकती हुई आत्माओं को शान्ति दे.

एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा बाकी बचे ना कोय।
तू रहे तेरा नाम रहे नहीं और रहेगा कोय ॥
एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा सबमें तेरा नूर समाया।
मेहर कर मैं तेरा बन्दा तेरी चौखट पे आया ॥
मेरा सतगुरु साँचा शाह है करम की रेख मिटावे।
भव अन्धयार से पार करके ज्योति ज्योत समावे ॥
जीवन और मौत के घाट हैं दो जहाँ तेरी जोत बले।
जहाँ कोई ना संग चले वहाँ तू ही संग-संग चले ॥
एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा

सुभा उठते ही जो परमेश्वर की इस प्रार्थना को पढ़ते हैं उनका पूरा दिन स्वर्ग के फूलों से महकता रहता है ।और जो रात में सोने से पहले इसे पढ़ते हैं रात भर उनके पास देवआत्माऐं उनके लिये प्रार्थना करती हैं ।

बेशक परमेश्वर ने इन्सान को अपनी सेवकाई और आराधना करने के वास्ते बनाया है।

Ek To Sachcha Tera Naam Sachcha

you alone are true your name is true...

Lord Yam the Lord of death took SatPurush Baba Phulsande Vale with him to the other world . there he showed him the land of Gods Heaven and hell . Then he took him to the abode of the almighty and said ,behold ! all the Gods and Angles pray to the Almighty alone . Bring the people of the world to the path of the Almighty , bring them to the path of God then , Satpurush prayed for the whole world thus _

O God ! **you are the lord of earth, sky and spirits. Who can equal you ? None. Deities and angels merry in thy light of your prayer. Give us a drop of the light. Give us your proximity. Enlist our names among your holy souls. Take us into light from dark. Bless them who are ill, bless them who are sad and helpless, bless your holy souls and evil ones too. Your grace be upon us, your light be with us. O God ! give us rest in your divine light. Make your way easy for them who come towards you. Take the cup of sadness away from us. O God ! give rest to the souls astraying in the woods of the world. You alone are true your name is true. No one but you will remain. You and your name exist forever. No one except you will be. You alone are true your name is true, your divine light shines in all. Bless me your worshipper, who has come at your door. My satguru my spiritual master, is my true lord, who undoes all my worldly deeds. He carries me beyond the darkness of the world and my soul rests in his. your light shines at the moments of life and death both. Only you accompany where no one else comes along. you alone are true your name is true...!**

Eshwar Aaradhna Esthl, GURU GADDI DARBAR
PHULSANDA, DIS. BIJNOR, U.P. **INDIA**, MO. 9412493683" 8273078122

अ इन्सान ! अगर तू परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करे तो संसार तेरी हर आज्ञा मानेगा।

क्या तुम अपनी खुदगर्ज़ ख़्वाहिशों को त्याग कर, कर सकते हो ईश्वर की सेवा ?
अगर मैं तुमको हीरे मोती के पहाड़ पर ले जाउं। और तमाम खजानों का तुमको मालिक बनादूं।
तो क्या तुम उसमें से कुछ नहीं लोगे। और सब का सब परमेश्वर के लोगों में बाँट दोगे ?
अगर मैं तुमको स्वर्ग की अप्सरायें दिखाउं। तो क्या तुम उनसे मुंह फेर लोगे ?
और सच के चिराग़ की हिफ़ाज़त करोगे। उस रोशनी को बुझने ना दोगे ?
यदि हां तो आओ तुम मेरी मुहब्बत को पाने के हकदार हुए।

तू सच्चा परमात्मा

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले कहते हैं—

प्रभ तू सच्चा परमात्मा
मैने गुरू किरपा से जाना।
मट्टी में नूर मिलाया रब ने
तब ये जगत प्रगटाना।।

मैने गुरू की किरपा से ऐसा जाना है कि उस सच्चे सिरजनहार परमात्मा ने अपने खालिस नूर को यानी परकास को मट्टी के साथ मिलाकर इस संसार की रचना रची है ।

खाक में प्रभ ने जोत एक रखी
एक मट्टी का पुतला बनाया।
पाप पुण्य के बाग लगाये
जिसमें जगत बसाया।।

अपने नूर को परमात्मा ने मट्टी के साथ मिलाकर मट्टी का एक पुतला बनाया उसका नाम मनुष्य रख दिया पाप और पुण्य को बनाया और उसमें मनुष्य को रखा सवाल ये उठता है कि पारमात्मा ने पाप और दुख और कलेस क्यों बनाये ? वो चाहता तो संसार को स्वर्ग जैसा ही बना सकता था जैसा कि देवताओं के रहने के स्थान को बनाया था किन्तु देवता स्वर्ग में रहते रहते अहंकारी हो गये थे वे अपने बराबर किसी को समझते नहीं थे तब परमात्मा ने उनके अहंकार को तोड़ने का एक उपाय सोचा उसने देवताओं के सामने ही मट्टी का पुतला बनाया उसे जिन्दा किया और देवताओं ने फिर कहा ये तो मट्टी है हम खालिस नूर हैं तब परमात्मा ने इन्सान को इस धरती पर भेजा पाप लोभ काम क्रोध बनाये तमाम मुश्किलें बनायीं उनके बीच इन्सान को रखा उसे धर्म का पाठ सिखाने खुद गुरू का भेष भरके आया मनुष्य का उसने हौसला बढ़ाया कि तुम मोहमाया की नदी को पार करो देवो से भी अधिक श्रेष्ठता मैं तुमको प्रदान करूंगा तमाम आँधी तूफान परेशानियां मैने देवों को दिखाने के लिये रची हैं ताकि उनके सामने मैं तुमको उनसे ऊँचा सिद्ध कर सकूं इस लिये तुम हिम्मत ना हारो थको मत मैं तुमको देवों से प्रणाम करवाऊँगा वे जिससे तुम्हारी महिमा करें कि देखो ये मट्टी में कैद होने के बाद भी पाप और लोभ में सना होने के बाद भी मेरे प्रेम में तुमसे आगे बाजी मारकर ले गया

मोती से भी ज्यादा मंहगे सतगुरू के बोल हैं। गुरू सेवा से सब कुछ मिलता सेवा धन अनमोल हैं।
गुरु के बचन जिसने माने वे फरिश्ते बन गये। पारब्रह्म परमेश्वर से प्यार के रिश्ते बन गये।।
परमेश्वर का नाम जप कर सच्चे काम। अपने संग औरों को भी करा नेकी के काम।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहते कर आसमानी चढ़ाई। सब किताबें बन कर पढ़ आसमानी पढ़ाई।।

मोह माया की हवा चले
उड़ता फिरे अकल का गुबार।
संतफकीर सुमरन करें
दुख में डूबा संसार।।

इस संसार में मोहमाया की हवा जलती है और अकल हवा में उड़ी फिरती है संतफकीर ही इस जगत के अर्थ को जानते हैं और परमेश्वर की याद में रहते हैं ।

आँखों से अपनी देखले
फना होती जावे दुनियां।
आसमान में कितने तारे
रब की महिमा ना जाने दुनियां।।

ये संसार तो रात दिन नष्ट हो रहा है आसमान में जो सितारे हैं वो अलग अलग दुनियां हैं तू अपनी आँख से देख और उस परमात्मा की कुदरत पर यकीन कर ।

लोभ लालच में जगत पड़ा
कभी रोवे कभी गावे।
मूरख प्रेत पशु समान
जगत में हराम का खावे।।

सारा संसार लोभ में पड़ा है पशु के समान हमराम का खाता है सच की राह को भूले बैठा है जरा उस रब को याद कर ।

दिल ऊपर शैतान बैठा
दोजख में खींच लेजावे।
जब दुनियां से होवे विदा
सब सिंगार उतर जावे।।

तेरे दिल पर बुराईयों का सरदार शैतान सवार है वो तुझसे रात दिन बुरे काम कराता है जब तू दुनियां से जावेगा वो तेरा सब सिंगार और शोभा नष्ट कर देगा और तुझे नरक की आग में धक्का दे देगा ।

वो परमात्मा सब कुछ जाने
तेरी एक एक बात।
सतगुरू के चरणों में बैठके
सुमरन कर दिनरात।।

उस परमात्मा से तेरे दिल की कोई बात छुपी नही है गुरू चरणों में बैठ कर उस सच्चे रब को याद कर ।

रब ने जब तुझको बनाया
तेरी खाक में नूर चमकाया।
और तूने इस सच्चे नूर को
मट्टी में मिलाया।।

परमात्मप ने अपने नूर को तेरी मट्टी में मिलाकर तुझे बनाया यानी मट्टी को रोशनी बक्शी पर तूने उस नूर की कदर ना जानी उसे तूने मट्टी में मिला दिया ।

सतसंगत में बसो रात दिन
करो सतकरम जीवन में।
फुलसन्दे वाले बाबा कहें
रब का नूर मिला है इस जीवन में।।

दुष्टों का संग त्याग कर सतपुरूषों की संगति में रहो परमात्मा का नूर गुरू ने तुमको बक्शा है उसकी हिफाजत करो ।

जिसने प्रभ का नाम जपा मन में पाया बिसराम। सतगुरू से अमृत पाया बन गये सब काम॥
सतकरमो की रोशनी जिसके दिल में हो गई। परमेश्वर की रोशनी उसके दिल में हो गई॥
बैतरणी में पड़ेगा डूबना सतकरमो के बिना। नरकों में जलना पड़ेगा भगती के बिना ॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते तीरथ गुरू चरणों में है। जीव का उद्धार हमेशा सतगुरू के चरणों में है॥

तेरे बिना

तेरे बिना प्रभ और ना कोई ।
तेरा किया सब जग में होई ।।

तेरी आस मुझे तेरी टेक ।
तू सदा सच्चा परमेश्वर एक ।।

सबके ऊपर तू पारब्रह्म करतार ।
सदासच तू एक करतार ।।

तू ही परमपुरख करतार ।
अगम अगाध सिरजनहार ।।

जल थल सबमें तेरी जोत ।
तू हर काया में ओतप्रोत ।।

गुरू सेवा से अमृत पाया ।
गुरू परसाद प्रभ प्रीतम पाया ।।

आतम जो माथं पे चले ।
वो प्रभ तेरे संग चले ।।

गुरू दरशन जिसको मिला ।
प्रभ का चाँना उसे मिला ।।

सतगुरू बाबा फुलसन्दे वाले ।
तूने दिये मुझे सच के उजाले ।।

सिवा तेरे

किसकी पूजा करूं सिवा तेरे
कौन परमात्मा है सिवा तेरा ।

लोग चाँदी बटोरते फिरते
ठोकरें दुनियाँ में खाते फिरते
कोई दौलत नहीं सिवा तेरे ।

पैदा होता हूँ मर जाता हूँ
अपनी किस्मत का लिखा पाता हूँ
कोई पूछता नहीं सिवा तेरे ।

दुनियाँ बनती है मिट जाती है
धूल इन्सान की उड़ जाती है
कोई कायम नहीं सिवा तेरे ।

मेरे हाथों में तेरी ज्योति है
ये मेरी रूह तेरा मोती है
साथ कोई नहीं सिवा तेरे ।

नफस इन्सान को गिराता है
दरबदर ठोकरें खिलाता है
रोशनी कहीं नहीं सिवा तेरे ।

आदमी जानवर है फरिश्ता है
तुझसे कोई ना कोई रिश्ता है
चैन मिलता नहीं सिवा तेरे ।

मेरे महबूब तू ही है दिल में
चाँद तारों की तू है महफिल में
कहीं कोई नहीं सिवा तेरे ।

वो परमात्मा तो हर एक के संग संग चलता है। वो परकास बनकर हर एक सर पर छावा करता है।
हर पल उस प्रभ का सुमरन करो करो हंकार चूर। सीने में झलकेगा फिर जगमग जगमग नूर ॥
सतगुरु के चरणों में सर रख के रोशन कर ले आत्मा। वो तो तेरे संग चले है निरंकार परमात्मा ॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते अजर अमर वे नर हुए। परमेश्वर की ज्याति से जिनके हिरदै निखर गये॥

संतफकीर

शीर का तात्पर्य दूध से है जो मनुष्य पीता है,परन्तु शेर वह सिंह है जो मनुष्य को चीर फाड़ देता है। यद्यपि ये दोनों शब्द समान रुप से लिखे जाते हैं,दोनों के अर्थ पूर्णतया पृथक हैं। इसी प्रकार दो व्यक्ति देखने मे एक जैसे होते हुए भी मूलतः भिन्न होते हैं। समानता के इसी भ्रम में संसार प्रायः सन्तों को नहीं पहचान पाता तथा उन्हें साधारण व नश्वर प्राणीमात्र मान लेता है। जो अच्छे व बुरे में भेद नहीं कर सकते, वे अभागे हैं। वे अपने को सन्तो के तुल्य तथा सन्तों को अपने समान समझते हैं। उनका तर्क है जैसे हम मनुष्य हैं वैसे ही वे भी हैं तथा दोनों ही खाने पीने उन्हें व सोने के समान अधीन है। उनमें सूक्ष्म दृष्टि का अभाव होता है तथा अज्ञानतावश वे महात्माओं एवं साधारण मनुष्य में भेद नहीं कर पाते। सभी मधुमक्खियों का आहार तो समान होता है परन्तु एक वर्ग तीक्ष्ण विष का निर्माण करता है तो दूसरा मधु का। दो नस्लों के मृग समान घास तथा जल का सेवन करते हैं परन्तु एक मलिनता उत्पन्न करता है तो दूसरा कस्तूरी। एक ही पानी से सिंचित एक ईख खोखली होती है तो दूसरी शक्कर से भरपूर। ऐसी लाखों वस्तुओं का उदाहरण दिया जा सकता है जो देखने में तो समान हैं परन्तु गुणों में भिन्न होती हैं। साधारण मनुष्य भोजन से शरीर में केवल मल उत्पन्न करते हैं तो सन्तजन इश्वरीय तेज को । जब सामान्य मनुष्य भोजन करता है तो लोभ व ईर्ष्या की उत्पत्ति होती है,परन्तु सन्तों का भोजन दिव्य ज्योति में परिवर्तित हो जाता है। एक यदि बंजर भूमि है तो दूसरा उपजाऊ व पवित्र स्थल, एक पशु तथा प्रेत के समान है तो दूसरा अति पावन देवदूत,दो समरुप चेहरे मधुर एवं खारे जल के समान विपरीत हो सकते हैं। विचारशील व्यक्ति ही खारे व मधुर जल में भेद कर सकता है। खाने पीने के स्वाद का पारखी ही विभिन्न स्वादों को परख सकता है। जो शहद के स्वाद से ही अनभिज्ञ है, वह मधु व मोम में भेद कैसे करेगा ? जादू को चमत्कार समझने वाले संसारी मनुष्य दोनो को ही मायावी समझते हैं। नास्तिक,वानरों की भाँति लड़ते झगड़ते हैं तथा उनका यही स्वभाव उनके विनाश का कारण बनता है।

जो तू सेवा करे सतगुरू की पावे नूर का मोती। जो तू दुनियां के संग फिरे खो जावे तेरा मोती॥
जैसों के तू संग रहेगा उनके संग होगा तेरा हिसाब। उनके संग ही खोलेगा धरमराज तेरी किताब॥
वक्त को खो दिया तो सब कुछ हाथ से चला जावे। तेरे हाथ से गया वक्त लौट के कभी नहीं आवे॥
कहें बाबा फुलसन्दे वाले बड़ा निष्ठुर संसार। जिससे तेरा गहरा प्यार वो ही करेगा तुझपे वार॥

असल और नकल

बन्दर मनुष्य का अनुकरण करता है ऐसे ही झूठे और जानवरों जैसे लोग सतपुरूषों की नकल करते हैं और अपने हाथ अपने आप काट लेते हैं । आस्तिक ईश्वर के निर्देशानुसार कार्य करते हैं परन्तु नास्तिक सदैव युद्ध के लिए तत्पर रहते हैं। उन्हें नष्ट हो जाना है, अतः उनकी उपेक्षा करो। पाखण्ड़ी भी श्रद्धालुओं के साथ मिलकर पूजा अर्चना तो करता है किन्तु उसकी उपासना हार्दिक अभिलाषा से नहीं अपितु प्रतिस्पर्धा से प्रेरित होती है। निष्ठावान व कपटी एक साथ पूजा—व्रत में सम्मिलित होते हैं तथा निर्धनों की सहायता पर भी खर्च करते हैं परन्तु एक वर्ग विजयी होता है तो दूसरे की हार जरूर है,अन्ततोगत्वा निष्ठावान जीतेंगे और धूर्त पराजित होगें। एक ही खेल के खिलाड़ी होते हुए भी दोनों एक दूसरे से इतना दूर हैं जितना कि जमीन से सूरज ,दोनों अपने अपने गंतव्य तथा अपने अपने मार्ग पर चलते हैं ,यदि कपटी को सच्चा और निष्ठावान कहो तो वह अत्यधिक प्रसन्न होता है,परन्तु यदि उसे कपटी कहो तो वह कुपित हो हिंसा पर उतारु हो जाता है। श्रद्धालु नाम से ही स्नेही प्रतीत होता है क्योंकि प्रेम उसका मूल स्वभाव है। पाखण्ड़ी नाम से ही दुष्ट प्रतीत होता है क्योंकि उसके दुष्कर्म घृणा एवं वैमनस्य को जन्म देते हैं। द, व , त अलग अलग शब्द होने पर को खास अर्थ प्रगट तो नहीं करते,किन्तु मिलकर जब देवता शब्द बनता है एक श्रेष्ठ व्यक्तित्व की पहचान होता है ,इसी प्रकार पाखण्ड़ी अपने अभिप्राय के कारण सुनने में अप्रिय लगता है तथा बिच्छू के डंक की तरह चुभता है। सागर का जल,पात्र के कारण खारा नहीं बल्कि अपने स्वभाव के कारण है। इसी तरहा तुम गुरू के सम्पर्क में आकर अपने को ईश्वरीय प्रकाश से भर सकते हो और मक्कार तथा दुनियांदारों के संग से अपनी आत्मा और बुद्धि के प्रकाश को पूरी तरहा से नष्ट कर लेते हो दिन रात सूरज चाँद तो चलते रहते हैं समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता मैं तो तुमसे इतना कहता हूँ कि अपने भीतर से विष को अलग करके अमृत का पौधा उगालो ताकि उसपर ईश्वरीय शान्ति के फल आवें और तुमको अच्छा लगे उन मक्करों से सावधान रहना जो भोले कबूतर दीखते हैं और बाज बनकर परिन्दों का शिकार करते हैं ।

जाके गुरू के पैर पकड़ तो होवे प्रभ की पहचान। जो सतगुरू की हो नजर छिन में हो कल्याण॥
जाके गुरू के पैर पकड़ उपजे निरंकार का प्यार। प्यार ही है भगती प्रभ की उपजे जोत अपार॥
जाके गुरू के पैर पकड़ वो तुझमें प्रभ को दिखावे। जिसने खुद में देखा रब कभी ना धोखा खावे॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते जो गुरू चरणों में प्यार। अपनी आंख से देखे अपनी आंख में करतार॥

सपना

बदायूँ शहर के ढीगंरा जी ने बताया जब मैं सतपुरूष से मिला भी नहीं था एक दिव्य पुरूष मुझे सपने में दीखते रहते थे जब आप को देखा तो ये तो वे ही सतपुरूष हैं जो हमें सपने में दिखते थे जब सतपुरूष मिले तो वे बोले हम तुमसे पहले भी मिल चुके हैं असल में हमारी बस खराब हो गयी थी सतपरूष बोले चिन्ता ना करो बस सही हो जायेगी और ऐसा ही हुआ मानो हम उनके ही वास्ते ही वहाँ रोके गये हों बस में एक आदमी सतपुरूष के दर्शन करने नहीं गया बाकी सब गये वह नास्तिक था और सन्तों को उल्टा सीधा कहता रहा फिर जैसे ही बस चली वह न जाने कैसे पहिये के नीचे आ गया मुश्किल से उसकी जान बची तब सतपुरूष आये उसकी पीठ पर हाथ रखा और दुआ करी कहा आदमी भले ही श्रद्धावान ना हो पर तुम जैसा नास्तिक भी नहीं होना चाहिऐ उसके लिए परमेश्वर की मेहेर के दरवाजे बन्द हो जाते हैं सतपुरूष ने बताया कि बदांयू का पुराना नाम वेदामऊ था जो कि वेद शिक्षा का केन्द्र हुआ करता था।

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालों ने दिनांक 13–12–2009 दिन रविवार को अपनी संगत को प्रवचन के दौरान कहा कि हम कुछ समय पहले कहीं जा रहे थे तो जमीन पर पड़े पत्थर हम से बार बार कह रहे थे कि साहिब को नमन साहिब को नमन पर हमें ऐसी बातों से खुश नहीं होना चाहिए क्योंकि अगर ये ही पत्थर किसी के हाथ में हों तो ये ही बरसने लगेंगे और चोट आयेगी हमें हर स्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए। वह एक परमेश्वर ही इज्जत और जिल्लत का देने वाला है। हुजूर सतपुरूष एक गाँव में रूके हुये थे रात के 2 बजे तो सब आराधना के लिए तैयार हुए वहीं किसी दूसरे गुरू के शिष्य थे वे उस वक्त गाना बजाना बन्द न करना चाहते थे एक बोला आराधना कहते किसे हैं आराधना होती क्या है ये तो बताओ सतपुरूष दूसरे कक्ष में सब सुन रहे थे वे मुस्कुराये और बोले इन लोगों से कहो हिन्दू बहस करने को आराधना कहते हैं मुसलमान नमाज को आराधना कहते हैं और फुलसन्दे वाले अपना दिल उस महबूब यानि परमेश्वर के आगे निकालके जब धरते हैं तो उस वक्त को आराधना कहा जाता है। तुम बताओ तुम कौनसी आराधना को अपना रहे हो तुम किस रास्ते पर हो ?

अनन्तकाल तक चमकती है परमेश्वर की ज्योत। गुरू का सेवक पावे रोशनी मनमुख दे सब खोत।।
लाखों तारे आसमान में चक्कर खाते रहते। सूरज चांद प्रभ की राह में जोत दिखाते रहते।।
परमेश्वर के जैसा दूसरा नहीं कोई संसार में। वो ही सिद्ध संत हुए जो बेसुद्ध उसके प्यार में।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहें गुरू बिन भगती ना होवे। बिना गुरू के परमेश्वर सनमुख कभी ना होवे।।

माथे पे तेरा नाम

डाक्टर सुमन चौहान कहते हैं हुजूर सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालों ने फरमाया कि हे देवपुत्रो ये चार मुख्य साधन हैं 1. सतसंग—पूरे सतगुरू का अपनी आत्मा में संग 2.जिक्र—मन्त्र का आन्तरिक जाप और उस जाप को सुनते हुये परमात्मा की जोत को अपने में महसूस करना 3.ध्यान—अपनी तवज्ह गुरू की तरफ ले जाकर शक्ति लेना 4. गुरू भक्ति—अपने शरीर की जगह गुरू के शरीर को ही देखना उस हस्ती में अपने को लीन कर लेना यानि गुरू का ध्यान और चिन्तन। हुजूर सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालों ने 1 मार्च 2002 को फरमाया कि बीमार के निकट जाकर उसका हाल पूछना भी धर्म का अंग है बीमार की हिम्मत ना तोड़े यादि वह मृत्यु के निकट भी हे तो यह न कहे कि बस तू अब मरने वाला है बल्कि ये कहे कि परमेश्वर तुम्हें ठीक करेगा परमेश्वर का नाम जपो गुरू चरणों का ध्यान करो बीमार के पास बाद विवाद व जोर जोर से ना बोलें उनके वास्ते परमेश्वर से प्रार्थना करे कि परमेश्वर इस पर दया करो । अगर मरीज मर भी गया हो तो भी परमेश्वर की दया हुयी क्योंकि वह उस कष्ट से छुट गया और स्वस्थ हो गया तो भी दया हुयी वह बीमारी और दुख से छुट गया अगर यथा स्थिति बनी रही तो भी परमेश्वर की दया हुयी कि वह अभी भी जीवित है और परमेश्वर का धन्यवाद अपने गुनाहों से तोबा तथा दान आदि शुभ कर्म कर सकता है।

3 जनवरी 2010 दिन रविवार को सतपुरूष ने फरमाया कि आप यह बात लिखलें कि जिन्होंने भी अपने मस्तक पे पवित्र मन्त्र एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा लिखवा रखा हे उनके मस्तक पे सोने का मुकुट परमेश्वर के महल में धरा होगा यह बात तुम स्वंय देखोगे इस मृत्युलोक को छोड़ने के बाद, आपने कहा मैं तुमसे सत्य कहता हूँ ये परमेश्वर का नाम तुम्हारे माथे की रोशनी है जिसपे देवता फिदा हैं आपके साथ वालों में समन्दर देवता, धनपति जी, चरण देवता, गरूण देवता, अग्नि देवता, भागीरथ जी ने अपने मस्तक पर यह पवित्र मन्त्र लिखवा रखा है।

गंगा जमना में स्नान तीरथ पूजा से क्या काम। ग्रन्थ वेद कुरान पुराण पढ़ने से क्या काम।।
क्या होवे बन में रहने से होम समाधि ध्यान। पूरे गुरु की कर सेवा जप परमेश्वर का नाम।।
वो प्रभ सिर्फ जो एक है अपने में उसको पहचान। छोटे बड़े सबमें वो समाया एक समान।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहें बचन गुरु का मान। खुद में ही देखेगा तू एक दिन सच्चा प्रभ सुल्तान।।

चरण वन्दना

हुजूर सतपुरुष पुज्य माता व पिताश्री की चरण वन्दना के वास्ते उनके पास सवेरे प्रतिदिन जाया करते सबसे पहले दैनिक हवन में आहुति देते,फिर बचनो का पाठ कराते उसके पश्चात संगीत का रियाज कराते फिर जो दरबार में पेड़ो पर गुरुदेव ने बचन लिखवाकर लगवाये हैं। उनको पढ़ते हुये माताजी की तरफ को जाते माता–पिता दोनो के चरण स्पर्श करके आर्शीवाद लेते फिर वहाँ पर अनंत ग्रन्थ एक पन्ने का पाठ कराते उसके पश्चात अपने माता पिता तथा दो चार बुढ़ी माताऐं जो आश्रम में रहती है। उनसे पूछते कि आपको कोई कष्ट कोई समस्या तो नहीं तब एक माता कहने लगी कि गुरुदेव हमे आसमानी बिजली से बहुत ड़र लगता है कि कहीं हमारे ऊपर ना गिर जावे। तब गुरुदेव कहने लगे ऐसा नही सोचना चाहिए और ना ही घबराना चाहिए। जो सतगुरु की शरण में रहते हैं उनको कभी ऐसे दुःख नही व्यापते। ना ही अकाल मृत्यु होती है तब गुरुदेव ने बताया जब हम देहरादून में थे हम संगीत का 18–18 घंटे रियाज करते थे एक दिन सवेरे से बारिश हो रही थी और हम सितार बजा रहे थे, जब हमारा रियाज पूरा हुआ तो हम दरवाजे के पास कुर्सी ड़ालकर बैठ गये और मौसम को देखने लगे बारिश बहुत तेज थी मौसम मे बादलो की गड़गड़ाहट हो रही थी तभी आसमानी बिजली कड़कड़ाती हुयी बहुत तेजी से हमारे बिल्कुल पास हमें छूती हुई खिड़की में से आकर दरवाजे से बाहर निकल गयी उसका प्रकाश इतना तेज था कि कुछ कहा नहीं जा सकता बहुत देर तक हम बैठे ईश्वर के बारे में सोचते रहे ।इस समय गुरुदेव रुद्रवीणा बजाते है। जो कर आदिदेव शिव ने उनको अर्पित की है। आज हिन्दुस्तान मे मुश्किल से दो चार व्यक्ति ही रुद्रवीणा बजा पाते है।नवम्बर 2008 में सतपुरूष परमात्मा के देवदूत ने संगत के सामने फरमाया कि मैं तुमसे सच कहता हूँ जो मेरे साथी रात दिन मेरे साथ ईश्वरीय कार्य में लगे रहते हैं उनके शरीर तो बेशक मनुष्यों के थे पर आसमान के फरिश्ते ही उनके माध्यम से संसार में कार्य करते थे क्योंकि किसी मनुष्य में इतनी सामर्थ नहीं है जो रात दिन हर घण्टे पर परमेश्वर की आराधना करे और रात दिन के काम में जुटा रहे मैं उन सबका ह्रदय से कृतज्ञ हूँ उनका धन्यवाद करता हूँ कि मेरे कारण उन्हें संसार में बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा किन्तु वे फिर भी ईश्वरीय कार्य में पीछे नहीं हटे और बराबर मेरे साथ लगे रहे।

परमात्मा का पता बतावे है सच्चा गुरू। तेरी आत्मा में नूर दिखलावे सच्चा गुरू॥
कण कण में वो ही समाया आदपुरख। तेरी रूह की जोत में नहाता है वो आद पुरख॥
जो प्रभ के सिवा और को पूजे वो गुरू अधूरा। परमेश्वर की करे अराधना सच्चा गुरू पूरा॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते अन्धा रस्ता बतावे। समाका भी अंधे के संग गड्ढे में गिर जावे॥

सबका मालिक एक

22 सितम्बर 2010 रात्रि बिजनौर के ग्राम गजरौला में एक सभा में परमात्मा के संदेश वाहक सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालों ने कहा कि हम धर्म सभा में गये थे तब शिरडी भी जाना हुआ वहां हमने साई बाबा के स्थल पर उनका मन्त्र सबका मालिक एक कहीं नहीं लिखा देखा वहां सभी सांई बाबा की मूर्ति की ही पूजा कर रहे थे जिसका रास्ता सांई ने दिखाया उस परमात्मा का वहां आज तक जिक्र नहीं हमें उस बात का गहन अफसोस हुआ फिर ख्वाब में हमारी सांई जी से रूहानी मुलाकात हुई हमने कहा कि यहाँ पर आपने तो परमात्मा का प्रचार किया और कहा कि सबका मालिक एक और आज ये आपके मानने वाले उस परमात्मा का जिक्र ही नहीं करते और मूर्ति को ही स्नान कराके उसे ही पूज रहे हैं आप कुछ करते क्यों नहीं तो सांई हमारी ये बात सुनकर खामोश हो गये और हमारी बात का जवाब नहीं दे पाये। आपने फरमाया कि हमें परमात्मा के साथ किसी को शरीक यानि शामिल नहीं करना चाहिए कोई भी उसके बराबर नहीं । उसकी कोई सुरत नहीं। 9 मार्च 2008 में हुजूर सतपुरूष परमात्मा के देवदूत ने संगत के सामने फरमाया कि अ मेरी कोम मेरी नसीहत पे ध्यान दे ताकि तुझे दुनियाँ में ऊँचा रूतवा हांसिल हो सके मैं परमात्मा की रोशनी तुम्हारे बीच लेके आया हूँ। कितनी ही आँधियाँ मेरे रास्ते में थीं वो तुमको मालुम ही हैं मैंने उस रोशनी को बुझने ना दिया भले ही उसे ढके ढके मेरे हाथ फुंक गये पर मैंने परवाह ना की मैं तुमसे कहता हूँ मैं इस रोशनी को तुम्हारे वास्ते संसार में छोड़ जाऊँगा मेरे बाद तुम इसकी हिफाजत करना जो भी माँगना हो अपने परमात्मा से माँगना किसी और से नहीं मेरे बाद तुम परमात्मा के अलावा औश्र किसी की आराधना ना करना लोग तुमको तरह तरह से बहकावेंगे पर मैंने तुमसे साफ कह दिया है कि उस परमेश्वर के बराबर दूसरा कोई नहीं है उसके सिवा जो दूसरे को पूज रहा है समझ लेना वो भटक गया है उससे तुम्हारा कोई वास्ता नहीं कभी तुम्हारा मन परेशान हो और समझ कुछ ना आता हो तो मेरे वचन को याद करना पढना वो सब तुम्हारे लिए अनन्त के 10 हिस्सों में लिखवा दिया है उससे तुमको तुरन्त रास्ता मिल जायेगा अन्य किसी से तुम्हें कुछ पूछने की जरूरत नहीं क्योंकि भटके हुये बहुत हैं और भटकोने वाले भी बहुत हैं जो कहना था वो तुमसे मैंने कह दिया है।

चाँद मेरे सरहाने

मेरे सरहाने चाँद रात भर
बैठा रहता है।
मैं सुनता रहता हूँ
वो उसकी बातें कहता रहता है॥

जब मेरी आँखें बोझिल होने को होती हैं तो ये संसार मेरी आँखों से ओझल होने लगता है तथा एक दूसरा ही संसार मेरी आँखों के सामने होता है मैं देखता हूँ मेरी रूह जिस्म से निकल कर बादलों में जाकर लेट गई है चाँद मेरे सरहाने आकर बैठ गया है वह ईश्वर की स्तुति गा रहा है और मैं आँखें बन्द करके रात भर उसे सुनता रहता वो कहता रहता और मैं सुनता रहता ।

मेरी धरती पे अम्बर से
उतरते रोशनी के साये।
मेरी आँखों का प्याला
रात भर छलकता रहता है॥

परमेश्वर के आकाश से मेरी धरती पर रोशनी ओढ़ ओढ़ कर फरिश्ते उतरते हैं मेरी आँखों के प्याले में वो उजाला रात भर छलकता रहता ।

भले ही तू हो परमेश्वर
और मैं माटी का पुतला।
जो दिल में बस गया वो
एक दिन मिलके रहता है॥

ये माना के तू परमात्मा है और में मट्टी का पुतला हूँ पर मेरे दिल में तेरा प्यार भरा है और जिसके दिल में जिसकी चाहत है वो एक दिन मिलके जरूर रहता है ,भले ही तू दोनो जहान का सुल्तान और बादशाह है और मैं तेरे काबिल नहीं पर सच्ची मुहब्बत ये सब कुछ नहीं देखती मेरी आँख तो सिर्फ उस सितारे पर लगी है ।

वो पत्थर तो नहीं है
उसके भी दिल में मुहब्बत है।
मेरी धरती पे वो अपने
फ़रिश्ते भेजता रहता है॥

वो परमात्मा कोई पत्थर नहीं है उसे भी अपने उन बन्दों से मुहब्बत है जो रात दिन तड़पके उसका नाम लेते रहते हैं, वो परमात्मा अपने फरिश्तों को अपना पैगाम देके इस संसार में समय समय पर भेजता रहता है, इससे जाहिर है कि उसे भी हम इन्सानो की कुछ फिक्र है ।

हमेशा किसकी ज़िन्दगी
यहाँ गुलज़ारों में गुज़री।
जो पैदा होता है वो फ़ना भी
एक दिन होके रहता है॥

हमेशा फूलों का मौसम नहीं रहता चमन वालों को भी अक्सर पतझड़ के दौर से गुज़रना पड़ता है जो पैदा होता है उसकी मृत्यु भी है।

तेरी रूह को तो सतगुरू ने
सच्चा सोना बना दिया।
तू इस सोने को दुनियां में
क्यों मट्टी करता रहता है॥

सतगुरू ने तेरी आत्मा को सोने की तरहा चमका दिया, तेरी आत्मा को परमेश्वर की रोशनी से भर दिया, तू इस चमकते सोने को इस दुनियां की ख्वाहिशों में मट्टी कर रहा है सावधान होजा, अपनी बात को खराब ना कर फिर पछतावेगा, बस संभलजा और सच की राह अख्तयार करले ।

तू प्रभ की रोशनी का महल
तू उसका सच्चा मोती है।
वो तुझपे मरता है
तू इस दुनियां पे मरता रहता है॥

ये जीव आत्मा अगर दुनियां की बुरी ख्वाहिशों से अलग हो जावे तो ये उस प्रभ की रोशनी का महल बन जावे वो परमात्मा तो अ इन्सान तुझसे बेपनाह प्यार करता है पर तेरी जान इस झूठे संसार के मतलबी लोगों के प्यार में पड़ी है अफसोस तू किस दिन समझेगा ?

गुरू के कदमो में तू बैठ
और दीदार कर रब का।
गुरू के चेहरे पे नूरे इलाही
उतरता रहता है।।

गुरू के पावन चरणों में बैठ कर उस ईश्वरीय ज्योति को देख गुरू की तरफ ध्यान से देख गुरू के मुख पर हर समय परमात्मा का चांदना उतरता रहता है ।

माथे की चौखट में बैठ
और उस रब का नाम ले।
वो मंज़िल पा ही लेता है
जो पंछी उड़ता रहता है।।

माथे में एक रोशनी की चौखट है ये परमात्मा का दरवाजा है जो उसने इन्सान के भीतर लगा रखा है वहाँ ध्यान लगा उस प्रभ का सुमरन कर जो चलता रहता है वा मंजिल पा लेता है ।

अकल को नींद आती है
जिक्रे यार जब होता।
वो अपने महल से झांकके
मुझको देखता रहता है।।

केवल परमेश्वर का सुमरन कर किसी से बहस ना कर, अकल वहां तक नहीं जाती जो रूह का रास्ता है, वो परमात्मा देख आसमान से तुझे झांककर तेरी तरफ को देख रहा है ।

उस मुंह से दुवा कर
जिस मुंह ने बकवाद ना की हो।
वो परमेश्वर भी सच्चे दोस्तों की
तलाश में रहता है।।

पहले अपने आपको पवित्र बना फिर उस परमात्मा से प्रार्थना कर वो परमात्म भी सच्चे लोगों को तलाश करता है ।

गुरू के मुंह से फूल झड़ते
चुगने वाले चुगते हैं।
वो क्या जाने जो दुनियां में
रात दिन बेहोश रहता है।।

गुरू के मुख से रात दिन ईश्वरीय बचन रूपी फूल झड़ते रहते हैं जो सावधान होकर मन के अहंकार और अपनी हठ को छोड़कर गुरू बचनों को ध्यान से सुनते हैं वे उन स्वर्ग के फूलों को अपने दामन में इकट्ठा कर लेते हैं ।

जो परवानो के दिल में
है उसे मक्खी क्या जाने
ये दुनियां की गन्द पे फिदा है
वो शमा के नूर में रहता है।।

संत फकीर ही परमेश्वर के नूर को जानते हैं दुनियांदार नहीं, वे मक्खी हैं जो गन्दगी के आशिक हैं, वे उस रब के नूर को क्या जाने ।

तू अपने नूर का प्याला लगादे मेरे होठों से।
तेरे मयखाने में आके क्या कोई प्यासा रहता है।।

मेरे रब ! मेरे सच्चे गुरू ! ये ईश्वरीय प्याला मेरे होठों से लगादे, मुझे लबरेज करदे, क्या तेरे यहां से कोई आज तक प्यासा गया है ?

वो वीरानो को गुलशन
बस्ती को जंगल करता रहता है।
किसी का घर उजाड़े और
किसी के घर में रहता है।।

वह प्रभ वीरानो में फूल खिला देता है और नगर बस्तियों को जंगल कर देता है । सब उसके हाथ में है जो चाहे सो करे ।

जो सच की रोशनी में
ज़िन्दगी भर चलता रहता है।
वो कुदरत की शमा बनके
हवा में जलता रहता है।।

जिसने अपने जीवन में सच्चाई को अपना लिया वह तूफ़ानो में मुसीबतों में भी आगे बढ़ता चला जाता है

मेरा दिल तेरा शैदाई है
बाबा फुलसन्दे वाले।
मेरा साया तेरी गलियों
में तुझको ढूंडता रहता है।।

अ मेरे सच्चे गुरू मुझपे रहम कर रहम कर मेरी आत्मा को अपनी शरण में लेले।

गुरूदेव रूद्रप्रयाग में थे एक माता उनके सामने अपना दुख प्रगट करने लगी बोली-मैने पूजापाठ सब छोड़ दिया है भगवान शिव ने मेरी बेटी को नहीं बचाया वो मर गई,इतना कहके वो रोने लगी, गुरूदेव ने कहा- अगर वो बचाते तो अपनी मरी पत्नी सती को ना बचाते उसे कन्धे पे रखे घूमते रहे ? हे माता विधि का विधान अटल है उसे कोई नहीं बदल सकता तुम परमेश्वर का नाम जपो और मन को शान्त रखो बस ये ही एक उपाय है और कुछ नहीं , जो बदनसीब हैं वे ही परमात्मा से रूठते हैं।

उतरे सितारे

अम्बर से एक दिन उतरे सितारे सारी रात मेरे घर नाचे बालकों की तरहा जाने क्या क्या कहते कहाँ जाऊँ पीछा छुड़ाके,कोई कहे मुझको गुड़ चने देदो कोई कहे मुझे कपड़े पहनादो कोई कहे एक सेब देदो कोई कहे मेरे सिर में तेल लगादो,कोई मेरे हाथों को चूमे कोई मेरे कांधे पे झूले ,एक ने किताब मेरे आगे धरी कहा हम तो सबक सब भूले , वो क्या है जो एक है जिसके जैसा दूसरा नहीं ? वो है ईश्वर जिसके जैसा कोई दूसरा नहीं है और जिससे शक्तिशाली कोई दूसरा नहीं है ।

वे दो पक्षी कौनसे हैं जो एक दिन में और एक रात में उड़ता है ? वे हैं चाँद और सूरज ।

वे तीन फल कौनसे हैं जो कभी कड़वे नहीं होते वे हैं माँ बाप और परमात्मा तक लेजाने वाला सच्चा गुरू,वे चार सितारे कौनसे हैं जो परमेश्वर के महल के ऊपर चमकते हैं ? वे हैं चार वेद । ऋग्वेद यर्जुवेद सामवेद अर्थवेद वे पाँच कौव्वे कौनसे हैं जो ईश्वर की राह में चलने वाले आदमी की आँख फोड़ देते हैं और सच्चाई के रास्ते से आदमी को हटा देते हैं ? वे हैं काम क्रोध लोभ मोह अहंकार ,वो सात घोड़े कौनसे हैं जो धरती का भार ढोते हैं ? वे हैं सप्तऋषि । वे आठ चींटियां कौनसी हैं जो हाथी को उठाकर चलती हैं ? वे हैं अष्टांगयोग यानी योग के आठ सिद्धान्त यम नियम आसन प्रत्याहार प्रणायाम धारणा ध्यान समाधि । हाथी मन है जिसे इन आठ चींटियों के द्वारा उठाया जाता है । नौ दरवाजों वाला महल कहाँ पर है कि जिसके दरवाजों को खोलो तो अंधेरा और बंद करो तो प्रकाश है ,यह है मनुष्य शरीर जिसके द्वार आँख कान प्राण जुबान आदि संसार की तरफ को खुलें तो नरक के अंधकार में मनुष्य गिरता है और इन दरवाजों को बन्द करके परमेश्वर का ध्यान व नाम जपे तो मोक्ष रूप प्रकाश इसे मिलता है । वे दस पक्षी कौनसे हैं जो परमेश्वर के सिंहासन को लेकर उड़ते हैं वे हैं पाँच यम और पाँच नियम । अहिंसा सत्य अस्तेय यानी निष्कपटता अपरिग्रह यानी अधिक इकट्ठा ना करना ब्रह्मचर्य तप शुचिता यानी पवित्रता संतोष स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधान इन्द्र के 11 हाथी कौनसे हैं जो स्वर्ग से उतरकर हमेशा पृथ्वी पर चलते है ? वे हैं पाँच ज्ञान इन्द्री पाँच कर्म इन्द्री और ग्यारवाँ मन । वह पेड़ कौनसा है जिसकी 12 शाखायें हर शाख पर 30 टहनी और 360 पत्ते हैं ? वह 1वर्ष है जिसके 12 महीने एक महीने के तीस दिन और कुल 360 दिन हैं । एक ने कहा जरा मुझको बताओ तारों को कौन चमकाता ? कौन रूहों को भेजे ज़मीन पे फिर अपने पास सुलाता मैने कहा सुन ओ तारा सिंह ये तो है सीधी सी बात सब कुछ बनाया है उस प्रभ ने जिसने बनाये दिन रात,किस आदमी से प्यार करे ईश्वर किसपे गुस्सा करता ? किसको अपना दोस्त बनाता किसे कुत्ते जैसा करता ? सच्चाई से प्यार करे ईश्वर झूठे पे गुस्सा करता, कपटी लालची से छीन लेता सब कुछ जानवर से बदतर करता ।।

जैसे जिसम में आत्मा जैसे तीर कमान में। जैसे पानी नदियों में सितारे आसमान में।।
ऐसे ही तेरे जिसम में है उस रब का नूर। जिसे सच्चा गुरू ना मिला वो रब से भी है दूर।।
इस इन्सानी जिसम में ढूंड उस करतार को। गुरू से नामदान ले फिर देख उस उजियार को।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहते गुरू बिन रस्ता ना पावे। जैसे नाव मल्लाह बिन कहीं भी डूब जावे।।

पाप कहाँ से आया

दुनियां में पाप कहाँ से आया क्यों आदमी ने दुख पाया ? कौन जगत में हुआ सबका प्यारा दुनियां ने सिर पे बिठाया ? जब उस प्रभ के हुकम को तोड़ा पापी हो गया आदमी । औरों को जब दुख देने लगा खुद दुखी हो गया आदमी ,जिसने नेकी के काम किये ,हुआ सबका प्यारा आदमी दुख में भी जिसने धीरज ना छोड़ा वो ही असल में है आदमी ,ऐसा पक्षी कौन सा है जिसके पंखो पे ईश्वर की स्तुति लिखी है लेकिन मुर्दो का माँस खाता है ? संसार की परछाईयों में डूबा हुआ साधु,वो कौन लोग हैं जिनके कर्मो का हिसाब चित्रगुप्त नहीं लिखता ? वो हैं परमात्मा के दोस्त यानि पैगम्बर जिनके कर्मो को खुद ईश्वर देखता है,वो क्या है जो शहद जैसा मीठा है लेकिन हकीकत में जहर है ? वो है संसार का प्रेम,यमराज के वो कौन से दो कुत्ते हैं जिनकी आँखों से कोई भी नहीं बच सकता ? वो है दिन और रात,वो कौन है जिसके पिछे आदमी भागता रहता है और हमेशा उससे दो हाथ पीछे रहता है वो उसके हाथ नहीं आती ? वो है उसकी तृष्णा वो हैं उसकी अपूर्ण इच्छाऐं,वो कौन सा पक्षी है जो बिना पंखों के उड़ता हुआ ईश्वर तक पहुँच जाता है ,वो है पूरे विश्वास से की हुई प्राथनायें,वो कौन सा कुत्ता है जो कभी भौंकता भौंकता चुप नहीं होता ? वो है कामुकता,एक तारा आया कहने लगा चलो मेरे संग नीलगगन में ,मैने कहा चुप रह धरती पे अभी बहुत काम मुझको हैं करने ,अपने ही गलत आमाल से ये आदमी गिर जाता ,अपनी ही साँस की भाप से जैसे दर्पण मैला हो जाता,औलाद हैं अपने जिसम के कीड़े जो आदमी को खाते,औलाद के आगे कितनो के सर शरम से झुक झुक जाते ,असल औलाद वो है जो कभी नहीं दुख देवे फूलों की तरहा माँ बाप को माथे पे रखलेवे नालायक औलाद के पीछे घर बरबाद हो जाते जो परमात्मा मेहेर करे वीरानो में फूल खिल जाते,साधु ने क्यों चोगा पहना दुनियां के ठगने को ? साधु ने क्यों चोगा पहना पराई नार तकने को ? साधु ने क्यों चोगा पहना माया बटोरने को ? साधु ने क्यों चोगा पहना झगड़े कलेस करने को? साधु ने क्यों चोगा पहना धोका छल करने को ? साधु ने क्यों चोगा पहना सूवर की तरहा खाने को ? साधु ने चोगा क्यों पहना औरों को ओछा बतलाने को ? साधु ने चोगा क्यों पहना पाखण्ड दिखाने को ? साधु ने क्यों चोगा पहना शेखी बघारने को ? या फिर अपने भाई भतीजों के घर सवांरने को क्यों साधु ने चोगा पहना क्या हराम का खाने को क्यों साधु ने चोगा पहना अमीरों को मक्खन लगाने को ? या आपसमें भई से भाई के लड़वाने को या दो दोस्तों में लठ चलवाने को या दो प्यार भरे दिलों में जहर घोलने के वास्ते या फिर न्याय के तराजू में कम तोलने के वास्ते या फिर इस संसार को धोखा देने के वास्ते या अपने ही पैरो पे कुल्हाड़ी चलाने के वास्ते कपटी साधु से परमात्मा क्या सलूक करेगा नरक में बुलाके क्या उसका आरता करेगा ? या धरती पर उसे आसमान जैसा बुलन्द करेगा या उसके सिर पर ताज रखकर कहेगा कि देखो ये है सन्यासी ?

बिन पानी के कपड़े को किस तरहा से धोयेगा। बिना रोशनी के अपनी रूह को कैसे धोयेगा।।
बिना दवा खाये भला रोग कैसे जायेगा। बिना इशक के उस रब को किस तरहा तू पायेगा।।
हीरे मोती रट रट के एक भी पैसा ना पायेगा। बिना गुरू के तेरा भरम किसी तरहा ना जायेगा।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहते गगन में बजता ढोल। प्रभ साजन तेरे सामने तू आँख तो अपनी खोल।।

साधु वो है

साधु वो जो चोगा पहन के करे प्रभु से प्यार, और इस सारी दुनियां को जाने प्रभ का परिवार,साधु वो जो झुक झुक चलता कभी ना कहे बड़ी बात ,चुप रहे मीठा बोले प्रभ नाम जपे दिन रात,साधु वो जो हर नारी को अपनी माता समझे ,किसी सोना चाँदी हीरा सबको मट्टी समझे,कौन बोलता है बादल में कौन सागर में बोले ,कौन हवा को देता जुबान कौन सितारों में बोले ,कौन बोले आदमी में कौन परिन्दों में बोले ,आदमी के पाप पुन्न को कौन तराजू में तोले ? आदमी के छुपे कपट को कौन बखत पे खोले ? ऐसे काम वो ही करता है राजों का महाराज राजों के वो ताज उतारे मंगतों को पहनावे ताज कौन अभागा है दुनियां में कौन भागवान ? कौन कमजोर है संसार में और कौन बलवान ? जिसको मिला है सच का रस्ता वो है भागवान हाथ जुबान कमरबंद का पक्का है जग में वही बलवान,वो सबसे कजोर है जो झूठ बके दिन रात ,वो अभागा है जो सबसे कर्जा ले ले खात ,वो अभागा है जग में है जिसका चलन खराब परनारी के संग रहे मारे मुर्गा और शराब,जो भाग से पूरा गुरू मिले तो मिल जावे भगवान ,जो गुरू की सेवा करे हो जावे गरूड़ हनुमान समान ,जो गुरू को परम आत्मा समझे परमात्मा मिल जावे जो गुरू में गुण अवगुण देखे मट्टी में मिल जावे,जो गुरू से करता कपट होवे अंधा या कोढ़ी जम ने लात मारके उसकी टांग तोड़ी झूठ बोलबोलकर दुनियां में खुद को तू बड़ा बतावे एक दिन तेरा झूठ तेरे संसार में आग लगावे कागज की पतीली आग में नहीं ठहरावे।

वो भी क्या दिन थे

वो भी क्या दिन थे क्या जमाना था ।
जब मेरा दिल तेरा दिवाना था ।।

मेरी तकदीर में था गम तेरा
गमे दुनियाँ तो एक बहाना था ।
अ मेरे चाँद तू ख़फ़ा क्यों है
मेरी गलियों में तुझको आना था ।

बरसों मैने तेरी माला फेरी
तू मेरे दर्द से बेगाना था ।
तू ही पूजा तू इबादत था मेरी
तू ही साकी तूही मयखाना था ।

मेरी महफिल का था चिराग़ तू ही
मेरा दिल सनम तेरा परवाना था ।
तेरा मिलना बिछुड़ना ख्वाब था एक
कुछ खोना था और कुछ पाना था ।

आज भी तू मेरे दिल में है
कल भी दुनियाँ ने ना पहचाना था ।
तूने जो भी दिया मंजूर है सब
तू खुदा था तू जानेजाना था ।

मैं हूँ खामोश क्या कहूं किससे
हाले दिल बस तुझे सुनाना था ।
अ मेरे हमनशीं कुछ तो बता
क्या ये ही दिन मुझे दिखाना था ।

बाबा फुलसन्दे वाले कहते हैं
दिल तो उस यार का दीवाना था ।

ख्वाबों के परिन्दे

ख़्वाबों के परिन्दे एक नशेमन बुनते रहते हैं ।
जो दिल में बस गये हैं वो एक दिन मिलके रहते हैं ।

नहीं पत्थर आख़िर वो भी एक इन्सान ही तो है ।
चलो उसे फिर से अपना ग़म सुनाकर देख लेते हैं
वो जिसके वास्ते उजड़ गया मेरी खुशियों का चमन ।
चलो फिर से उसी मेहेरबाँ को मनाकर देख लेते हैं ।

क्या पता वो समझे या ना समझे मेरी हकीकत को ।
चलो फिर भी कदमो पे उसके जिन्दगी लुटाकर देख लेते हैं ।।
नहीं मालूम मेरा साया भी उस तक पहुँचे या ना पहुँचे ।
मगर फिर भी चलो मुकद्दर आजमाकर देख लेते हैं ।

हवायें तेज हैं बेशक और तूफान है सर पे ।
मगर फिर भी शम्माएदिल जलाकर देख लेते हैं ।।
नहीं मालूम वो आये ना आये कहने से मेरे ।
मगर फिर भी चलो उसको बुलाकर देख लेते हैं ।।

मुहब्बत में है टूटा दिल फिर भी शिकवा क्या करना ।
चलो फिर सोचते हैं मुस्कुराकर देख लेते हैं ।।
हमेशा जिन्दगी किसकी गुलजारों में गुजरी ।
चलो काँटों से भी उल्फत निभा कर देख लेते हैं ।।

क्या मालूम मेहेरबाँ होके रब देदे मुझे मेरा प्यार ।
चलो दुवा में अपने हाथ उठाकर देख लेते हैं ।।
इबादत हो या तन्हाई या तारों भरी रात हो ।
उठाके दिल के पर्दे को तुम्हें हम देख लेते हैं ।।

मेरे सिरहाने आके चाँद जब बैठता है रात में ।
जिसम से निकलके हम तुझे हमनशीं देख लेते हैं ।।
दिलों के तार जब झनकार कर खामोश हो जाते हैं ।
निगाहों में तेरी हम छुपा हुआ प्यार देख लेते हैं ।।

तुम बहुत याद आते हो दिन हो या रात हो ।
तस्वीर तेरी सीने से लगा लगा कर देख लेते हैं ।।
ज्यादा ना उसकी बातें करो फुलसन्दे वाले बाबा ।
दीवारों के कान होते हैं लोग बहुत कुछ देख लेते हैं ।।

जोत निरंजन ओंकार निरंकार सोहंग सतनाम। अलख अगम अनामी के परे परमेश्वर का धाम।।
बहस कर कर बोझ बढ़ावे चुप रह और जप नाम। एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा कर इसकी पहचान।।
मंजिल पे तो खड़ा है तू नहीं तुझे पहचान। चल गुरू के सामने तेरा मिट जावे अज्ञान।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहते सुन सजन नादान। अमृत तेरे भीतर बहे तू दुनियां में परेशान।।

पाँच मंजिलें

एक बार एक गाँव में सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले अपने अनुयाइयों के साथ धर्मसभा करने गये जैसे ही वो प्रवचन करने बैठे माइक उसी वक्त खराब हो गया संगत में निराशा छा गई अब बचन नहीं हो सकते तब सतपुरूष ने कहा आप लोगों के मन में जो जो बातें हैं या कोई उलझन हैं या प्रश्न हैं तो आज से अच्छा अवसर नहीं मिलेगा आप अपनी जिज्ञासाओं को कह सकते हैं और इस प्रकार से ये धर्म सभा प्रारम्भ हुई कई ने कई तरहा की बातें पूछीं तब एक वृद्ध सतसंगी खड़े हुए बोले गुरू महाराज जब हम इस गांव में आये तो कुछ लोग हमारे पास आये और बोले तुम्हारा मंत्र एकतू सच्चा तेरा नाम सच्चा ये भी कोई मंत्र है ? हम देखो पांच गुप्त नाम जपते हैं और किसी को बताते नहीं और हमारे गुरू ऐसे गांव गांव नहीं फिरते गुरू महाराज आपने बहस करने को मना किया है पर हमें उन लोगों के आचरण से बड़ा दुख हुआ आप मेरे मन की शान्ति के लिये इस विषय में कुछ कहिये कि पांच शब्द क्या हैं ? तब सतपुरूष ने कहा देखो परमेश्वर तो एक है चाहे हिन्दुस्तान से बाहर चले जाओ या चांद सितारों पर चले जाओ या आकाश गंगा में जाके खड़े हो जाओ वो तो एक है वो अनन्तकाल तक चमकने वाली ज्योति है उसका कोई नाम नहीं है पर लोगों ने उसके असंख्य नाम अपने अपने प्यार में रखे हुए हैं और उस परमात्मा को जो कुछ भी प्यार और श्रद्धा से कहो वो ही भगती कही जाती है जब मृत्यु के देवता हमें परमेश्वर के धाम में ले गये तो पाँच मुकाम बीच में आये जोतनिरंजन जिसे अर्द्धनारीश्वर कहते हैं आधा हिस्सा पुरूष का आधा स्त्री का । इसमें समाके हम ओंकार में गये जहां कितने ही सूक्ष्म आत्मा उस धुन में समाये थे उससे ऊपर निंरकार की जोत में गये जिसके चारों तरफ असंख आत्मायें परमेश्वर का नाम जपते हैं उसे रारंग या निरंकार कहते हैं उससे ऊपर सोहंग के आकाश में हम गये जहां आत्मा स्वयं को ईश्वर यानी मालिक कुल का मानने लगता है उससे ऊपर सतनाम का देस हैं जहां आत्मायें हंस कहलाती हैं ओर अमृत पीती हैं उसके ऊपर अलख अगम और अनामी तीन मंजिल हैं जिनको गुप्त रखा है ओर उनसे परे वो है जिसे परमातमा या कुलमालिक कहते हैं उसी मुकाम पर ये आवाज होती थी एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा । तुम किसी से बहस ना करो जो अपने अहंकार में खुश हैं उनको खुश रहने दो चुप रहो और परमेश्वर का नाम जपते रहो ।

धन के लोभी लोगों को झाड़ पहाड़ पुजवाते। धन के लोभी लोगों को उल्टी राह बताते॥
धन के लोभी देवी देवतों के मंत्र जपवाते। धन के लोभी पत्थरों में जाके सीस निवाते॥
धन के लोभी तीरथ में मूरत को भोग लगाते। धन के लोभी हवन यज्ञ दान के गुण गाते॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते लोभ में मत पड़ना। परमेश्वर का नाम जपना गुरू के चरणों पे पड़ना॥

आम के पेड़

हुजूर सतपुरूष ने अप्रैल 2010 दिन रविवार को अपनी साध संगत के सम्मुख फरमाया कि उन दिनों हम केवल नमक की रोटी खा रहे थे ना कोई सब्जी और ना फल ले रहे थे एक रात्रि आम के वृक्ष ने एक दिन ख्वाब में सतपुरूष से कहा कि तुम हमें अपना नहीं समझते ना ही हमारे फलों को खाते हो हमने आज सारे जिले के आम के वृक्षों को बुलाया है और ये निश्चय किया है कि हम पूरे जिले से आम सुखा देंगे कोई आम का पेड़ इस क्षेत्र में नहीं रहेगा यदि हम एक सतपुरूष की सेवा नहीं कर सकते तो हमारा जीवन बेकार है सतपुरूष ने कहा हम तुमको अपना मानते हैं तथा तुम्हारे फलों को ग्रहण करेंगे आम वृक्षों ने कहा ठीक है कल आप देव वृक्ष के नीचे जाना वहाँ हम आपको बिन मौसम ही एक पका हुआ फल प्रदान करेंगे और ऐसा ही हुआ जब सतपुरूष वहाँ पहुँचे एक फल अचानक गिरा उस वक्त फलों का मौसम नहीं था। सतपुरूष ने वो फल खुद भी खाया और सभी को जो उनके साथ थे खिलाया।

हुजूर सतपुरुष ने अपनी साध संगत के सम्मुख अप्रैल 2010 को एक रिविवार के दिन फरमाया कि जिस साधक के मन में स्वादिष्ट भोजन की ललक बनी रहती है उसकी दृष्टि से देवलोक ओझल हो जाता है उसकी आँखों के सामने से परमेश्वर के महल की तरफ जाने वाली सीढ़ियाँ कोहरे में छुप जाती हैं अतः तू स्वादिष्ट भोजन और गिजा खाने का इरादा ना रख वो साधक धन्य है और रोशन रूह वाला है जिसने अपनी खुराक कम से कम कर ली15 साल तक ईरान के एक संत केवल जौ की रोटी और गरम पानी पीते रहे ताकि अपने नफ्स को मार सकें उनके संग फरिश्ते आकर उपवास खोलते थे वो संत अपने एक जन्म में सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले ही थे जो आज तुम्हारे सामने हैं और तुम हो कि खाने पीने के लिए ही लड़ते रहते हो।

मार्च 2005 रविवार को संगत के सामने हुजूर सतपुरूष ने फरमाया कि तुम रूमाल या छोटे कपड़े का दस्तार ना बनाओ तुम केवल सफेद वस्त्र का दस्तार ही बांधो वो दस्तार का वस्त्र थोड़ा लम्बा हो और तुम सत्संग में सफेद वस्त्र ही पहन कर आया करो आराधना भी सफेद वस्त्रो में करो यह सफेद रंग बड़ी मुश्किल से मिलता है यह वस्त्र सतपुरूषों को मिलता है सच्ची आत्माओं को और सतपुरूष अपने अनुयायियों को देते हैं।

बीते वक्त को रोते रहना है बिल्कुल बेकार। बकवादों में बखत बिताना है बिल्कुल बेकार ।।
धन माया पे नजर जमाना है बिल्कुल बेकार। प्यार का दिखावा करना है बिल्कुल बेकार ।।
गुरू के चरणों से मन फेरना है बिल्कुल बेकार। करामातों की चाह करना है बिल्कुल बेकार ।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहते मत कर तू मन मर्जी। हाथ में लेके कैंची खड़ा काल रूपी दर्जी ।।

घाटियाँ

हुजूर सतपुरूष ने साध संगत के सामने फरमाया कि परमेश्वर के मार्ग में कई घाटियाँ रास्ते में आती हैं जिसमें मुख्य सात घाटियाँ हैं 1. खोज की घाटी 2. दिव्य प्रेम की घाटी 3. दिव्य ज्ञान की घाटी 4. निसंगत की घाटी यानि संसार में रहते हुये भी स्वंय को उस प्रभु के संग जानना 5. एकत्व की घाटी यानि एक ही तत्व को सबमें देखना 6. आश्चर्य की घाटी 7. फना और बका यानि ब्रह्मलीन और शाश्वत जीवन की घाटी।

हुजूर सतपुरूष ने अपनी साध संगत के सामने रविवार के दिन फरमाया कि पवित्रता और अपवित्रता केवल मनुष्य जगत तक सीमित है वह परमात्मा जो तमाम शारीरिक आवश्यकताओं और सीमाओं से परे है वह पवित्रता या अपवित्रता सबसे परे है मनुष्य अगर पवित्र रहता है तो उसका कोई लाभ परमात्मा को नहीं वरन मनुष्य को ही होता हे इसी प्रकार माला फेरने या भजन कीर्तन से कुछ परमात्मा पवित्र या प्रकाशित नहीं हो जाता बल्कि ऐसा करने से मनुष्य के मुख से मोती टपकता है उससे वह खुद ही पवित्र होता है।

हुजूर सतपुरूष ने अपनी संगत के सम्मुख एक रविवार के दिन फरमाया कि क्या तुमको पता नहीं कि जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है परमात्मा को सब पता है किसी जगह तीन व्यक्तियों की ऐसी गुप्त वार्ता नहीं होती मगर उनमें वह चौथा होता है और न कोई पाँच की होती है मगर वह उनमें छटा होता है भले ही तुम कहीं भी हो वह तुम्हारे साथ होता है और कयामत के दिन वह तुमको बता देगा कि वो ही तुम्हारे साथ साथ ही था।

हुजूर सतपुरूष परमेश्वर के देवदूत ने अप्रैल 2010 को रविवार के दिन फरमाया कि नहीं है किसी की हस्ती सिवा परमेश्वर के अगर तुम परमात्मा को चाहते हो तो दुनियाँ की मुहब्बत से बचो पर आज के साधु कैसे हैं हमारे एक शंकरार्चा सोने के पलंग पर सोते हैं हरिद्वार कुम्भ में एक गुरू 14 हजार रूपये किलो की सब्जी खा रहे हैं कोई चेलों से उपहार में गाड़ी, मोटरसाईकिल, टी वी फ्रिज आदि ले रहे हैं और शर्म नहीं करते कि एक दिन परमात्मा को भी मुँह दिखाना है जिसके तुम सेवक यानि नौकर अपने आप को कहते हो जरूर ये चेलों के साथ नरक जावेंगे सच्चा साधु वो है कि कोई कुछ दे तो भी ना लेवे तप और साधना में लगा रहेऔर खामोश रहे ।

गुरू बचन मन में बसाले होवे अंधेरा दूर। गुरू की किरपा के बिना जिन्दगी बेनूर॥
गुरू बचन मन में बसाले बरसे ज्योत अपार। गुरू की किरपा से मिले वो सच्चा करतार॥
गुरू बचन मन में बसाले बन जावे तू शाह। गुरू किरपा जिनपे हुई वे हो गये बेपरवाह॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते वे नर भागहीन। जिनकी अकल शैतान ने ली है उनसे छीन॥

जुबान काबू में

हुजूर सतपुरूष ने अपनी पाक मुबारक जुबान से फरमाया कि जो अपनी जुबान को काबू में कर लेता है वो स्वर्ग और वहां के देवताओं को काबू में कर लेता है ज्यादा ना बोले, झूठ ना बोले, कड़वा ना बोले व्यर्थ बकवाद ना करे परमेश्वर के जिक्र के सिवा दूसरी बात ना करे किसी की झूठी प्रशन्सा या चापलूसी ना करे किसी की निन्दा या चुगली ना करे किसी का दिल दुखाने वाली बात ना कहे मन्त्र जपे मौन रहे उत्तेजना पूर्ण वचन ना बोले।

एक बार हुजूर सतपुरूष ने अपनी पवित्र वाणी से कहा कि सताबर अश्वगन्धा पीपली छोटी, मैंथी, सौंठ, सुरजान श्री काला नमक जामुन की गुठली एक समान मात्रा में लेकर पीस लें फिर आधी चम्मच सुबह शाम हल्के गर्म पानी से ले यह चूर्ण किसी भी प्रकार के हड्डी के दर्द व वदन दर्द में लाभप्रद है।

एक बार हुजूर सतपुरूष ने अपनी पवित्र वाणी से कहा कि यह चूर्ण मिश्रण सभी प्रकार के वायु के दर्द में लाभप्रद है अगर शरीर में गैस व दर्द ज्यादा हो तो एक चम्मच सुबह शाम ले वरना आधा चम्मच लें। टाटरी, मैंथी पिसी, हुई काला नमक, अजवाइन, हींग, काली मिर्च, छोटी हेड, नौसादर, कम मात्रा में सिरोंजने का रस, सौंठ, सुहागा को लेकर चूर्ण बना लें।

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालों ने 11—08—1995 में फरमाया कि इन्सान की प्रकृति ऐसी है कि वो नाशुकरा है अपने मालिक की तरफ से लापरवाह है स्वार्थ के वशीभूत हुआ माया के जाल में फसा इंसान अज्ञान के अन्धेरों में भटकता फिरता है परमेश्वर ने अपनी सृष्टि में इंसान को सर्वश्रेष्ठ बनाया औश्र बहुत प्रेम किया और फरिश्तों से उसे सजदे कराये इसी तरह हुजूर सतपुरूष स्वामी जी की मेहर से यहाँ साध संगत को शिष्टाचार व अदव सिखाने के वास्ते देवलोक से आये देवताओं से सतसंगियों को सजदे कराये परन्तु उन इंसानों ने उसके अर्थ को ही सही ढंग से नहीं लिया और अभिमान में कहते हैं कि दरबार फुलसन्दा की संगत में आने वाले देवता तो हमें नमस्कार करते हैं हुजूर ने फरमाया जिस तरह मालिक हमें प्रेम करता है और बख्शनहार सदा हम पर अपनी दया करता है उसी तरह हमें भी सदा उसके प्रेम में उसकी बंदगी में सर झुकाये खड़ा रहना चाहिये वरना तुम्हारा नाम नशुकरों में लिखा जायेगा परमेश्वर तुम्हारा नाम पवित्र आत्माओं में लिखे ।

देख पुराने देवता संत गुरू और पीर। वक्त गुरू ने ही बदली है उन सबकी तकदीर॥
बिना गुरू के कभी किसी को उजयारा मिलता नहीं। बिना गुरू के सिरजनहारा मिलता नहीं॥
वक्त गुरू ने सारे जग को उजयारा दिखलाया है। हर किसी ने वक्त गुरू के आगे सीस झुकाया है॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते पतंग गुरू के हाथ। सच्चे गुरू की पतंग को नहीं कोई सकता काट॥

संत फकीर

हुजूर सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालों ने एक दिन अपने बिजनौर प्रवास के दौरान का जिक्र करते हुऐ कहा कि डाक्टर साहब विधाता देवता कल ऋषिपाल, ब्रह्मा जी बगेरा का आराधना के समय काफी इंतजार किया ये दोपहर बाद दानी जाके के घर पर थे जब ये नहीं आये तो हमने अकेले ही संध्या व रात्रि वाली आराधना की ये लोग रात्रि में लगभग 12 बजे नुमाइश देखकर यहाँ पहुंचे दानी जी हमारी संगत में इस बात के लिए मशहूर हैं कि वे सतसंगियों को विनय पूर्वक खिलाते पिलाते हैं ऐसा ही जिक्र वो लोग भी करने लगे कि दानी जी ने खूब खिलाया पिलाया और आने ही नहीं दिया हुजूर सतपुरूष ने उन सभी के सामने हमसे फरमाया कि मछली कांटे में खाने के लालच से ही फंसती है खाने पीने की मामूली बात के लिए इन्होंने सतगुरू के साथ आराधना करने के महत्व को भी नहीं समझा जबकि आराधना से बढकर कोई फर्ज या काम नहीं है वो भी सतगुरू के साथ खड़े होकर आराधना करना तो बहुत ही दुर्लभ है जो लोग खाने पीने और दुनियाँके तमाशे में व्यस्त रहेंगे वो परमेश्वर के रहस्य को क्या पा सकते हैं संत फकीरों को देखो वो रूखा सूखा खाकर सदा परमेश्वर के ध्यान में सुमरन में लगे रहते हैं और कभी किसी से जरा भी शिकायत नहीं करते वो तो मालिक की रजा में राजी रहते हैं।

हुजूर सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वो अपनी संगत को 15 जून 2010में शुक्रताल शुकदेव मुनि के स्थान पर ले गये वहां पर संगत को भागवत पुराण को पढकर सुनाया तथा शुकदेव मुनि द्वारा राजा परिक्षत को परमेश्वर के बारे में दिया गया ज्ञान का दुबारा वर्णन हुजूर सतपुरूष ने किया। गुरूदेव के अति निकट रहने वाले धनपति देव ने बताया कि गुरूदेव कह रहे थे कि हमारे शुक्रताल जाने से पहले एक रात्रि शुकदेव मुनि हमारे निकट आये और कहने लगे बहुत अच्छा है कि आप हमारे स्थान पर भागवत पुराण का वर्णन करने जा रहे हैं हम भी आपके साथ साथ ही भागवत पुराण पढेंगे और आपके साथ रहेंगे इसका जिक्र हुजूर सतपुरूष ने संगत के सामने इस तरह किया कि आप ये समझें कि शुकदेव मुनि ही यह भागवत पुराण कथा आप लोगों को सुना रहे हैं बेशक चाहे वह आप लोगों को दिखायी ना दें परन्तु वह यहीं हैं यह मानें।

मन के पीछे भटक रहा है ये सारा संसार। मन की चाल समझले पहले फिर जप सच करतार।।
मन ने जाने कितने लोग इस जग में भटकाये। एक से एक मूरत बनाई सौ भगवान बनाये।।
सूरज चांद बनाये जिसने उसको दीप दिखाया। प्रभ मिलन की राह में कैसा धोखा खाया।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहते असीम को कैसे पावे। वो मिलता उसको जो अपने भीतर ध्यान लगावे।।

जहां सतगुरू वहीं परमेश्वर

18 मई 2010 को सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले अपनी संगत के साथ संत रविदास जी के पवित्र जनम स्थान वाराणसी सीर गोवर्धन पहुंचे और वहां सत्संग किया हुजूर सतपुरूष ने रविवार के सत्संग में साध संगत को बताया जब हमने वाराणसी रविदास जी परम संत जी के जनम स्थान पर जाने का इरादा किया तब सतपुरूष रविदास जी ने कई बार सतपुरूष से भेंट की उनको बड़ा प्यार किया और एक वाणी गायी जो इस तरह थी पारब्रह्म परमेश्वर स्वामी सब घट घट के अन्तरयामी।

हुजूर सतपुरूष ने फरमया कि परलोक यात्रा जब हमें हुयी तो बार बार कहा जाता था जो तुमको दिखाया है तुमको आसमानों में उसका जिकर संसार में करो पर सतपुरूष चुप रहते कि मेरी बात कौन मानेगा तब आपने परमेश्वर से कहा कि मेरे गवाह बना दो तब सात लोगों को परमेश्वर ने परलोक के अनुभव कराये फिर बाद में गुरूदेव ने परमेश्वर की महिमा को कहना शुरू किया यह सुन कर वहां बैठी एक माता ने कहा कि जब मैंने गुरूदेव के दर्शन भी नहीं किये थे और ना मैं गुरू दरबार में गयी थी मुझे गुरूदेव के दर्शन सात देवताओं को साथ अक्सर होते रहते थे कि देवगण गुरूदेव के संग आकाश में विचरण कर रहे हैं।

11जुलाई 2010 रविवार के दिन हुजूर सतपुरूष ने अपनी संगत के सम्मुख फरमाया कि जो शख्स गुरूवाणी यानि परमेश्वर चालीसा सुमरन पाठ और निचे समन्द है इन तीनों वाणियों का नित्य नियम से और समझ के पाठ करेगा उसकी अगर आँखों पे चश्मा भी चढा है तो वह उतर जायेगा उसकी दृष्टि तेज हो जायेगी आपने आज तीनों वाणियों का पाठ भी किया।

हुजूर सतपुरूष ने साध संगत के सामने कहा कि इस परमात्मा के घर यानि आश्रम में मोबाइल को बन्द कर दें अपने घर जाते समय जब आश्रम के परिसर से बाहर आयें तो पुनः चालू कर लें और कोई स्त्री सतसंगी सोने व अन्य जेवरात के गहने पहन कर ना आये और स्त्री और पुरूष सतसंगी केवल श्वेत वस्त्र ही धारण करके ही इस परमात्मा के घर में अपनी हाजरी दें। जहां परमेश्वर का जिक्र होता है जहां सतगुरू हैं वहीं परमेश्वर है ।

मट्टी के इन्सान बनाये मट्टी में नूर छिपाया। कोई अमीर कोई गरीब कोई मजबूर बनाया॥
अकल के ऊपर पर्दा पड़ा दीन धरम और जात का। दिल के ऊपर कोहरा छाया मूरखो की बात का॥
गड्ढे में गिर गये बहुत चले जो देखा देखी। दिल में जिनके सच नहीं उजड़ गई उनकी खेती॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहें जो नहीं सच का उजयार। किस तरहा से परमब्रह्म देवे तुझको दीदार॥

अ इन्सान

हे बाहर से भले और भीतर से दुष्ट तेरी कुटिल बुद्धि ना होने देगी तुझे कभी संतुष्ट। बाहर से स्वच्छ साफ किन्तु कड़वे जल के समान एक एक बूंद तेरी त्याज्य विष के समान। सूर्य की किरण धूल और दर्पण पर पड़ती समान। जो सतपुरूष हैं वे हैं उस परमात्मा का नूर हैं दुष्ट आदमी बीमार कुत्तों की तरहा प्रभ से दूर हैं। जो झूठ बोलता है जो दगा करता है वो हम लोगों में से नहीं जो दोस्त बनाकर धोखा देता है वो हम लोगों में से नहीं लोभ लालच के पीछे जो छोड़ देता सच का रास्ता वासनाओं के पीछे जो तोड़ देता हर रिश्ता कव्वे की तरहा कुटिल है जो वो हम लोगों में से नहीं फुलसन्दे वाले बाबा कहें दुष्ट परमेश्वर के दोस्तों में से नहीं हैं हमारे कुछ साथियों के गलत अमाल हम लोगों का बदनाम करते हैं संसारी लोगों जैसा उनका लालच उनसे नीच काम कराता है, सीख ली है उन्होंने चालाक लौमडियों सेपर मक्कारियों से वह प्रभु कभी किसी से खुश नहीं होता। झूठ बोल बोल के जो इकटठा किया उन्होंने वैभव ईश्वर के साम्राज्य में वो किसी काम नहीं आवेगा वे लोग पछतावा करेंगे पर उस वक्त तुम देखना उनके सब रास्ते बन्द होंगे, उनकी सुनवाई नहीं होगी वो लाख गिड़गिड़ाऐंगे पर कोई उनका मददगार नहीं होगा और तुम उनको यहां संसार में भी कुत्तों की तरहा भौंकते देखोगे कि वे मारे मारे फिर रहे हैं और उनके मुख का तेज नष्ट हो गया है। ईश्वर की आज्ञा में जो हैं वो प्रवेश पाते दिव्य आत्माओं के संग में परमेश्वर के उजाले में वे चलते हैं धरती पर मगर लीन रहते दिव्य आलोक में। जो हैं विरूद्ध सत्य के वे प्रलय पर्यन्त दुख सोग में आहें भरते , पर जो दोस्त हैं प्रभ के लगे होंगे उसके सीने से लेटे होंगे नेत्र मूंदे वे उसकी गोद में फुलसन्दे वाले बाबा कहें आओ मेरे संग चलते रहो तुम उस प्रभ के मृदु शान्त सीतल आलोक में और सावधान रहना उन मकर मिलाने वालों से जो तुम्हारे पास तुम्हारे मित्र की तरह आवेंगे पर वे देखना तुम्हारी आत्मा को छलनी करेंगे और तुमको प्रेम के बदले कड़वे पानी के कुण्ड में गिराकर चले जावेंगे उस दिन तुम मेरे बचन को याद करना और शान्त बने रहना ।

सुनो उसे कहाँ खेजते पत्थर पीर मजारो में। सुनो उसे कहाँ खोजते महंतों के गलयारो में।।
सुनो उसे कहाँ खोजते गंगा जमना के धारो में। सुनो उसे कहाँ खोजते भेष गद्दीदारों में।।
सुनो उसे कहाँ खोजते मूरत और तस्वीरो में। सुनो उसे कहाँ खोजते झूठे पीर फकीरो में।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहते गुरू तेरी आंखें खोलेगा। सुन गुरू का सच्चा बचन वो तेरे पर्दे खोलेगा।।

सुनो हे मेरे साथ वालो !

सुनो हे मेरे साथ वालो ! वह जो है सब सारों का सार,सब उजयालों का उजयार, युग–युग से जिसकी महिमा करते पैगम्बर और अवतार,धर्म परायण लोग उसके घाट से अमृत पाते दुष्ट नाष्तिक संस्कारहीन दुखी बिलबिलाते। पर तुम्हारा दृढ़ विश्वास ही तुमको जगमगाता है उस सर्वोच्च की मैत्री तक तुमको ले जाता है। चलो उस तरफ रतन चुगने उसके आभामण्डल में फुलसन्दे वाले बाबा कहते आती हैं उसकी किरणें इस भूमण्डल में। तुम्हारा निर्मल हिरदै है उस सर्वशक्तिमान की सुनहरी किताब जिसका हर एक हरफ–हरफ स्तुति जिसका हरफ–हरफ गुलाब,पहली सलाह तुझे मेरी तू हृदय को पवित्र करूणामय प्रकाशित बना अपने जिस्म अपने ही वजूद को उस सर्वोच्च का घर बना तू पुरातन अमिट अनन्त श्रेष्ठता का साम्राज्य पायेगा वह पुराण पुरूष परमेश्वर तेरा दिलबर बन जायेगा छोड़ कुटिलता दुष्टता तू भोले कबूतर जैसा बन तू दुष्ट खूनी भेड़िया मत बन। कि कहीं तेरे बुरे करम तुझको ही जला कर राख ना करदेवें ? ना कर अन्याय किसी के संग जो प्रभ की खुशी चाहे ना कर न्याय की अवहेलना प्रभ प्रेम से खुद को जो भरना चाहे बन उस प्रभ का विश्वास पात्र मत तोड़ विश्वास किसी का औरों की नहीं अपनी आँखों से देख घर उस प्रभ का।अपने पड़ौसी को मित्र को ठग के तुझे क्या मिलेगा कभी खतम ना होने वाला पश्चाताप मिलेगा,न्याय का तराजू सदा रख अपनी आँखों के सामने रख, प्रभ रखेगा तुझे सदा अपनी आँखों के सामने,फुलसन्दे वाले बाबा कहें रोज खुद का धो के निखार,तब प्यार करेगा बहुत तुझे वो तेरा परवरदिगार। इस जुबान को बन्द रख ना किसी की निन्दा कर दिल ही दिल में प्रभ की स्तुति को तू किया कर। कानों को बंद रख औरों की बुराई मत सुना कर,दिल ही दिल में तू प्रभ की बातों को सुना कर। संसार से तू ज्यादा ताल्लुक मत रखाकरजो दुनियाँ का है बादशाह उसे माथे पे रखा कर,सब तरफ फैली उसकी रोशनी आँखों को बन्द कर ना बाहर छलक पड़े रोशनी। तू प्रभ से प्यार कर जो वो तुझसे प्यार करे तुझे अपनी रोशनी से लबरेज करे तुझे अपना बनाके रखे ।

**पत्थर में है आग छिपी और जमीन में पानी। तेरी मट्टी में रब छुपा समझ अकल इन्सानी॥
सपने में उड़ता फिरे पंख ना फिर भी निकले। खुद को कैसे समझे जब तक काया से ना निकले॥
किसको पार कर सकती है कागज की नाव। हाथ में माला फिरे दिल में दुनियां का चाव॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहें चल गुरू के सामने। बात गुरू की मान रब भी आ जावेगा सामने॥**

बदकार

अ परमेश्वर की तरफ को मुंह किये हुए सुन अगर तू उसे नहीं प्यार करेगा तो उसका प्यार तुझ तक कैसे पहुंचेगा ? तू उसके बनाए हुए खिलौनों से प्यार करता है तू खुद उसका खिलौना है वो तुझसे प्यार करता है। गुरू पढ़ाता है पहले फिर इम्तहान लेता है वक्त इम्तहान लेता है पहले और बाद में सिखाता है । फुलसन्दे वाले बाबा कहें मेरी बात मान ले दुनियाँ को जानना बाद में पहले खुद को जान ले। करके ओछे काम कब तक मुँह को छुपायेगा प्रभ के दूतों के हाथों एक दिन पकड़ में आयेगा। तेरी खुदगर्जी एक दिन तुझको रूलायेगी दुनियाँ के सामने तेरा मुँह काला करवायेगी। फुलसन्दे वाले बाबा कहें हे प्रभ मेरे साथ वालों का माफ कर हम तेरे पुराने बदकार और गुनहगार है हैं इन्साफ के नहीं काबिल रहम के काबिल हैं,सिर्फ हमें माफ कर। गुरू से जो दगा करता सात जनम कोढ़ी रहता, बाप से जो दगा करता सात जनम बेऔलाद रहता, माँ से जो दगा करता सात जनम जवानी में मरता,पत्नि से जो दगा करता सात जनम नपुंसक रहता,औलाद से जो दगा करतासात जनम जमीन जायदाद से बेनसीब रहता दोस्त से जो दगा करता सात जनम निंधन रहता,अपने धरम से जो दगा करता सात जनम अंधा लंगड़ा रहता, अपने वतन से जो दगा करता सात जनम बिना गुनाह के जेल में रहता, फुलसन्दे वाले बाबा कहते दगाबाज परमात्मा का दोषी रहता। पानी को हाथ लगाता पानी सूख जाता सोने को हाथ लगाता मट्टी हो जाता। जो झूठी गवाही देता वो गूंगा बनता है जो आँखो देखी बात मुकरे वो अंधा बनता है। जो संन्यास का बाना पहने और फिर त्याग देवे वो साधु गन्दगी का कीड़ा बनता है,मदिरा माँस जो खावे वो सूअर बनता है जो सच कहके पलट जावे वो भंगी बनता है सदा औरों के दोष कहे वो मच्छर बनता और दूसरों का खून उसकी गिजा होती, अ इन्सान बाज आ ना चल उस राह पर जहां आदमी आदमी नहीं रहता बन जाता है गधा सूवर और उल्लू , तू गुरू के साथ है पर जानवर जैसे काम करता है ?

गुरू के कदमो पर सर रखदे तो पावे उजियार। नीच को भी ऊँच करे सच्चे गुरू का प्यार॥
सबसे ऊँची गुरू की पूजा बचन गुरू का महान। गुरू बचन जो मन बसावे होवे वो महान॥
कर दरस सच्चे गुरू का मिट जावें सब सोग। नाम जप गुरू का दिया मिट जावें दुख रोग॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते दुनियां दुख का खेत। करमो का अंधयाव चले उड़े रेत ही रेत॥

घायल परिन्दा

तेरी नज़र के तीर से
दिल परिन्दा घायल हो गया ।
यानी के मैं भी अब तेरे
प्यार के काबिल हो गया ।।

तरों को रात रात भर
तकती थीं आंखें मेरी
ले मैं भी अब तेरे चाहने
वालो में शामिल हो गया ।।

उस पार आसमानो में
तेरे दीवाने थे झूमते
मुझे पंख इश्क ने दिये
तेरी महफिल में शामिल हो गया ।।

मैं इस तरफ फ़ना हुआ
उस तरफ मंजिल मिली
तेरा इशारा डूबने वाले
का साहिल हो गया ।।

वो दीन मजहब इबादतें
वो किताबें तस्बी मस्जिदें
चाहत में तेरी जानेमन
मैं सबसे गाफ़िल हो गया ।।

चाहत में जिसकी रात दिन
लेटा रहा मैं अश्कों पे
एक दिन वो ही मेरा मेहेरबां
मेरे ख्वाबों का कातिल हो गया ।।

जिसने किताबे इश्क को
नूरानी मुर्शिद से पढ़ा
सब मंजिलें तय हो गईं
वो बजुर्गे कामिल हो गया ।।

हम भी नहीं खाली रहे
जाती हुई बहार में
अ दोस्त तू ना मिला तो क्या
तेरा ग़म तो हासिल हो गया ।।

जिसने तेरे दर को छोड़ा
और दुनियां की गन्द में जा गिरा
किसी काम का नहीं वो रहा
हुशियार भी जाहिल हो गया ।।

अ हमनशीं तेरे इश्क में
देख मुझको ये मिला
दोनो जहां का दर्द मेरे
दिल पे नाजिल हो गया ।।

फुलसन्दे वाले बाबा
कुछ सुना है और भी आपने
तेरा दिवाना कपड़े फाड़े
काफ़िरो में शामिल हो गया ।।

तेरी नज़र के तीर से
दिल परिन्दा घायल हो गया ।
यानी के मैं भी अब तेरे
प्यार के काबिल हो गया ।।

मैने जग से प्यार किया इस लिये दुख पाया। दुनियां को मैने अपना समझा इसलिये दुख पाया।।
गुरू के चरणों को चूमा तो पाया दिल का चैन। नहीं तो मेरी आत्मा फिरती सदा बेचैन।।
सच्चे गुरु के द्वार से मैने पाया सच का उजियार। गुरू के द्वार से मुझे मिला परमपुरख करतार।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहें प्रभ तू मेरे दिल का मोती। मैं तो खाली ठेंकरा तू है मेरी ज्योति।।

वो परमात्मा

वो परम प्राचीन परमात्मा
जो करता है तुझको प्यार
उसने नक्काशी करी
तुझपे अपनी सुन्दरता
सुन्दर उसने संसार बनाया
पर तू है उसकी सुन्दरता
हे मनुष्य तेरा सजन
प्रभ को प्रिय था इसलिए किया
तू उस प्रभ को प्रेम कर
जिसने तुझसे असीम प्रेम किया
फुलसन्दे वाले बाबा कहें
जब में तू प्रभ की चर्चा कर
जीवन की चेतना को प्रभु
ताकि तुझमें देवे भर।

तू उस प्रभ को प्यार कर
ताकि तू उसे समझ सके
अगर नहीं भी समझा तो
स्वंय को उसके आगे धर सके।
कभी ना जान सकेगा तू
उस प्रभ को अपने मट्टी के तन में
अगर नहीं ज्योति जगाई तूने
उसके प्रेम की अपने मन में।
फुलसन्दे वाले बाबा कहें
तेरा स्वर्ग है सिर्फ उसका प्यार
दुखदाई काँटों के गहनों जैसा
है संसार का प्यार।

घर के आदमी ही जब
घर को ढाने लगते हैं
मरहम लगाने वाले ही जब
घाव बढ़ाने लगते हैं।
सच का बाना पहन के
झूठ को सच बताने लगते हैं
अपनों से बैर गैरों से
दोस्ती निभाने लगते हैं।
भाग्यहीन आँखों से
तब दुख की बरागत होती है
नेकी के फरिश्ते जमी से
उड़–उड़ के जाने लगते हैं।
फुलसन्दे वाले बाबा कुल्हाड़ी नहीं
लकड़ी ही लकड़ी को काटती है
ऐसा भी वक्त आता है जब
अपने भी बेगाने लगते हैं।
हंस हंस के अपना बनाके
जख्म देते हो तुम हमें
मालूम है जख्मों के भरने
में जमाने लगते हैं।

सुन मेरे सच्चे सतगुरू मुझे पर्दा बनके ढकले। मेरी मैली आत्मा को नूर में अपने रखले॥
सुन मेरे सच्चे सतगुरू मेरे सिरपे रखदे हाथ। सुन मेरे सच्चे सतगुरू तेरा कभी ना छूटे साथ॥
सुन मेरे सच्चे सतगुरू मैं तेर दर का दास। दुनियां की मुझे आस नहीं मुझे एक तेरी आस॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहें मेरा खाली कटोरा भरदे। मैं हूं तेरे कदमो की मट्टी मुझको सुनहरा करदे॥

मक्कारी

अपनी मक्कारी को वो
अपना हुनर समझता है
मैं खामोश रहता हूँ
तो मुझे बेनज़र समझता है।
वो नासमझ आसमान पे
पानी उछालकर उस पानी को
बरसात का मंजर समझता है।
कितनी धूल कितने काँटे
हैं मेरे पाँव में
अच्छी तरहा ये बात
मेरा सफर समझता है।
फुलसन्दे वाले बाबा कहें
तू समझे या ना समझे
तेरी हर एक बात को
बंदापरवर समझता है।
जिस प्रभु ने तुमको फूल दिये
उसी ने मुझे काँटों का मुकुट बक्शा
किसी को ताज तख्त मुल्क
किसी को भीक का कटोरा बक्शा
निर्मल हृदय को उसने
बक्शी मुहब्बत अपनी
सियाह दिल को
कारून का खजाना बक्शा।
तेरा प्रेम मेरे प्रभु मेरा स्वर्ग है
देवों फरिश्तों को भी तूने
ना ये सरमाया बक्शा।
तुझसे मेरा पुर्नमिलन
तेरे साम्राज्य में मेरा पर्दापण
मेरे लिये जो नियत था
वो ये ही है जो तूने बक्शा।
बेशुमार तुमने बक्शे हैं
दरयादिली से अपनी
फुलसन्दे वाले बाबा हम भी तुम्हें
देखेंगे जो तुमने हमें बक्शा।

खुद को मिटाके देखा तो
वो यार नजर आया
पलकें डुबाई अंधेरों में तो
उजयार नजर आया।
सोहबत में फकीरों की
जो सुर्ख रूह हुआ
वो दुनियाँ की नजर को
बेकार नजर आया।
फिरती थी सितारों में
हू हू करती हवा
तारे चमकते थे मेरे सियाह दिल में
तू क्यों बेकरार है दिल मेरे
तुझे क्या नजर आया।

तेरी रहमत पल पल हे प्रभ मेरे सिर पे बरसती है। फिर भी क्यों ये नज़र मेरी दीदार को तेरे तरसती है॥
तेरा नाम जपूं रात दिन रोशनी अपनी देदे। उस रोशनी को जग में बाँटूं इतनी हिम्मत देदे॥
तू इज्जत जिल्लत का मालिक तू मालिक दुनियां का। मुझे फिकर अपना है तुझे फिकर दुनियां का॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते दुख चाहे लाखो देना। सच्चे सतगुरू कभी भी अपनी जुदाई मत देना॥

सच्चे बादशाह

अ सच्चे बादशाह अ सच्चे रब
अ दुर्गति से निकालने वाले मेहरबान
अ परमात्मा! अ सब कुछ जानने वाले
अ दोनों दुनियाँ जहान के सुल्तान !
तू ही है जो पटबीजनों को
सितारों तक उड़ना सिखाता है
तू ही है जो अपना नाम लेने
वालों को अपने नूर में मिलाता है
तू बक्शता है इज्जत या जिल्लत
जमी से आसमान तक
तू ही ले जाता है गढढों से
निकालकर पहाड़ की चोटी तक
और तू ही गिरा देता है
पाताल के अंधेरों तक
तू ही मटटी को सोना बना देने वाला
तू ही सोने को मटटी बना देने वाला
जाने तू क्या करता है कि
दिल में रहने वाले
दिलों जान से भी प्यारे बैरी
बनकर मेरी मटटी खराब करते हैं।
तो कभी अजनबी अंजाने लोग
मुझे सीने से लगाकर
मेरे बहते आँसुवों को पौंछते हैं।
कभी लालच की आग में
राख हो जाता ख्वाबों का महल
कभी वासना के सैलाब से
घर जाता दहल।
जिन पे मैं करता
अपने से भी ज्यादा यकीन
अपने वजूद से भी ज्यादा विश्वास
वे ही फूँक देते मेरा फूंस का छप्पर
वे ही कर देते मेरा जड़ से नास।
जिन गुलाबों को मैं
अपने हाथें से लगाता
वे ही साँप बनके मुझे मारते डंक।
जिन्हें अपने हाथों मैं पहनाता
सुनहरे परिधान
वे ही मेरे कपड़े फाड़कर
मुझे कर देते नग्न।
जो जो मेरा दाँत टूटता चला जाता
दूर सबकी निगाह से
उन्हें पत्थरों के नीचे छुपा आता
उन दाँतों ने बहुत समय तक
मेरा साथ दिया है
मैं कभी उनकी निन्दा न करता
सदा अपनी ही कमी बताता।
कौव्वे उड़ते मेरे घर के ऊपर
मैं सोचता एक दिन हंस भी जरूर आऐंगे।
अपनी भीगी आँखों को
छोटे बच्चों की तरह मैं समझाता देखो
एक दिन तुम्हें खिलौने लोके दुँगा जब
पतझड़ के दिन निकल जायेंगे।

गुरूमुख गुरू की की हर आज्ञा माथे पर रखता है। सदा नीवा नीवा चले सबकी सेवा करता है॥
गुरूमुख नेकी के रस्ते पर अंतिम सांस तक चलता है। गुरूमुख बदी से दूर रहे सच का दम भरता है॥
गुरूमुख प्रभ के ध्यान में वाद विवाद से दूर रहे। पारब्रह्म के नाम के नशे में हर दम चूर रहे॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते गुरूमुख पे कुरबान। गुरूमुख के भीतर से झांके पारब्रह्म भगवान॥

मेरे सच्चे सतगुरू

मेरे सच्चे सतगुरू ओ मेरे खूबसूरत साकी नूर से लबरेज प्याला लगादे मेरे होठों से।

टकराती है प्यास ही प्यास उदास मेरे होठों से। प्रेम का रास्ता दीखता है आसान शुरू में पर वो बहुत मुसीबतों के साथ आता है, सुभा की हल्की हवा खोलती है उसके रहस्य फरिश्ते जहाँ अचरज से उड़ते हैं। सियाह जुल्फों के पेचोखम की तरह उलझी है जिन्दगी। यार की महफिल में मैं वहाँ तेरे हाथ से प्याला पीने कैसे आऊँ। मंदिर की घंटियां बुला रही हैं परमेश्वर की तरफ जाने वाले तीर्थ यात्री को, उस यार के नशे से बंधा है जिसकी आत्मा का तार, कि खो जाऐगी सब तुम्हारी पहचान और सांसारिक वासनाए, सितारों को देखकर सूचना इकटठी कर रहे हैं ज्योतिषी कि कब होगा मिलन तो क्या ले जाउं उपहार उस सुन्दर हमनफस के लिए उन यात्रियों पर सतपुरूषों पर पैगम्बरों पर करो विश्वास जो वहां तक गये और जो फार्मूले उन्होंने दिये हैं, अंधेरी रात्रि डरावनी लहरें, भवंर प्रचन्ड जो शरीर से रहित निराकार है, वो हमारी दशा को कैसे जानेगा, अरे उसे कोई बताओ। मैंने खुद राहे इश्क को चुना और मैं जानता हूँ कि लोग जिसे बुरा कहते हैं एक रहस्य कैसे रहस्य रह सकता है जबकि वो हर एक की जुवान से बूंद बूद टपक रहा है। अगर तू उसकी मौजूदगी को पक्का करना चाहते हैं तो तुम खुद ही उस रोशनी को आने से क्यों रोक रहे हो खुद ही तू रोशनी के उपर काली छाया ना बन तुम उसके साथ जुड़े रहो जो तुम पर छाया है और झूठी बातों को अपने उपर से हटा दो।

इश्के खुदा की गर्मी हसरत से है जमी आसमान हरकत में एक राज छुपा है मेहबूब तेरी नशे निगाह की रहमत में बादल की तरह बरसती है तेरे इश्क में तपती रूहें मेरे ऊपर जो भरी हैं तेरी चाहत की मदिरा से लबालब बादलों और आसमानों के उपर। कहां है वे ज्ञान में रमण करने वाले, कहां हैं उनके रोशनी से छलकते प्याले ? पुकारता है तुझे मेरा पागलपन ।

सतगुरू जिसपे हाथ धरे उसको खालिस नूर करे। बड़े बड़े शाहों को भी झुकने पे मजबूर करे॥
सतगुरू जिसपे हाथ धरे करें देवते उसकी सेवा। जिसने परमेश्वर को सुमरा फिर क्या देवी देवा॥
जाहिल सोच करे दुखी रहे पावे ना सत की ज्योति। ज्योति तो सतगुरू देवें जिनपे सच्चा मोती॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते गुरू के पैरों लाग। दुनियां नहीं ये सांप है दूर इससे भाग॥

कहां गये वे

कहां गये वे ईश्वरनिष्ठ मेरा हाथ पकड़ने वाले। मेरा सन्तुलन खो गया कहां ये बेखुदी मुझे ले जायेगी कहाँ से कहाँ पूजा घरों के नियम कहाँ धरे रह गये लोग पहुँच गये शैतान तलक क्यों भगवान के घर से निकलकर सज्जनता ठोकर खाती है क्यों संसार तक नक्षत्रों को गति देने वाला कहां है और ईश्वरीय प्रेम का प्रारम्भ कहाँ है दरवेश झूमते झूमते पहुँच गये कहाँ, पुजारी बातें बनाते रह गये कहाँ? थोथा ज्ञान किसी काम का नहीं है प्रभु के आशिकों के लिए अपनी रगों को तार बना कर बजाते और नाचते हैं वे उसके लिए परमेश्वर की घर की सेवा कहाँ से शुरू होती है प्रर्थना में बजते साज की धुनें कहाँ से शुरू होती हैं हमारे प्रेम की प्रगाढता के सामने मन के शत्रुओं ने खड़ी की है सेना कहाँ है मृत्यु के बाद होने वाली ईश्वरीय ज्योति और मार्ग का उजाला वो किरण कहाँ है जिसे सूर्य से दीपक ने उचक कर अपने नन्हे हृदय में रख लिया था। मैंने अपनी आँखों को तुम्हारी चौखट की धूल से धोया है तुम बताओ मैं किस जगह जाऊँ, तुम्हारे प्रेम का उन्माद और व्याकुलता को लेके। ओ यात्रि अपनी सुन्दरता के गुमान की तरफ से अपना ध्यान हटा और रास्ते पर पड़े जाल की तरह ध्यान दे वो जाल तेरी आत्मा रूपी चिड़िया को कैद ना कर ले ओ मेरे हृदय तुझे कहाँ जाने की इतनी उतावली है उस प्रभु की याद में बहुत खुशियाँ इकटठी हो रही हैं इनको कागज के टुकड़ों की तरहा सम्भाल के कहीं हवा ले उड़े ? तेरा प्रेम दिखाना, गले लगाना, और शरमाना कहाँ गया ? तुम्हारे इश्क ने मुझे ऐसा रोगी बना दिया जिसे न नींद है न चैन है आराम क्या है? चैन कहाँ है ?नींद और ख्वाब कहाँ हैं तुम्हारे ध्यान में है आराम, तुम्हारी याद में है चैन, तेरा तसव्वुर है मेरी जिन्दगी। अपनी आत्मा के उपर तेरे प्रकाश को मैंने ओढ़ लिया है अ मुर्शिद तेरे फुलसन्दे की मिटटी को खुशबू की तरह ओढ़ लिया है मैंने अ मेरे मुर्शिद अपने जीवन में मैंने ऐसा कोई कार्य नहीं किया कि मुझे मनुष्यों के सामने और ईश्वर के सामने लज्जित होना पड़े ।

नूर का प्याला नाम है सच्चा पीवे कोई कोई। तन में रहके तन से अलग जीवे कोई कोई।।
सच्चा नाम सतगुरू ने बक्शा सिमरे कोई कोई। दुनियां की गंद में सब पड़े निकले कोई कोई।।
अपने ही ऐब दुख देते समझे कोई कोई। गुरू बचन रतन दिल की संदूकची में धरे कोई कोई।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहते सतगुरू भाग से पाये। कोई कोई गुरू की चौखट पे सारी उमर बिताये।।

स्वर्ग मुझे बुलाता

रात दिन स्वर्ग मुझे बुलाता था पर मैं उससे बेखबर परमेश्वर के इश्क में सितारों को चूमता घूमता फिरता था वह मालिक कुल हर क्षण अपनी किसी न किसी आभा का प्रकटन करता रहता है। सतपुरूष ईश्वरनिष्ठ पुरूष ईमान आस्था अ बू ए गुल खींच ले गुलशन को अपने दामन में अ रूह खींच ले कुल आलम को अपने दामन में आलमे अर्वाह–आत्माओं का लोक में चल अपने दिल को, अपनी अक्ल को तंग मत बना इंसान अरे चूहे की खाल में नहीं मढे जाते नक्कारे। ईश्वर तेरी मदद करे दिल को बना तू अपने समन्दर के आसमान के सितारे भी जिसमें नहाने को आवे उतर। पंख लगा कंधे पर गरूड का सारे ब्रह्माण्ड की तू सैर कर जिस बात में कोई नसीहत नहीं, वो बात है किस काम की ना हो उपासना ईश्वर की तो अन्य की उपासना किस काम की कितने ही ईश्वर के मित्रों को मिटटी में मिला दिया नाश हो उन कवियों का जिन्होंने ऐकेश्वरवादियों को मूर्ति पूजक बना दिया सिंहासन आसीन गुरू भारत को घर घर भीख मांगने वाला बना दिया। सूरदास, तुलसी, व्यास, ने शुरू कराई मूर्ति पूजा वेद दृष्टा आदि शंकराचार्य भी करने लगे 5 देवों की पूजा। जिस्म से एक दिन रूहें निकलीं पहुँची ऐसे बाग में आज तक देखा न था जिसे किसी इन्सान की आँख में, एक खूबसूरत स्वर्ग का देवता अचानक कहीं से आया वहाँ मेरा हाथ पकड़के ले चला ना गया था कोई आज तक जहाँ। हैरान थीं आँखें मेरी तभी मैंने ईश्वर का दरवाजा खटकाया खुलते ही दरवाजा रोशनी का एक सैलाब आया। कितने ही देवगण उस बाढ़ में बहते हुए आते थे हाथ में था साज कोई और गीत ईश स्तुति के गाते थे। हमें देखकर बोले आओ हमारे साथ जमीन पर हम जाते हैं वहां एक निर्मल हृदय प्रभु से रात दिन लौ लगाये बैठा है जहाँ वे लेके मुझे चल दिये मेरा आत्मा विहिन शरीर दिखलाया बोले ओह ये ही तुम हो फिर हंस कर सीने से लगाया । देर तक वे नाचे वहां और देर तक गाते रहे रात भर चाँद की रोशनी में ईश उत्सव मनाते रहे बोले अब हम चलते हैं ।

सच्चे गुरू के मखु से जिसने प्रभ का नाम पाया। उसने इस संसार में रतन अमोलक पाया॥
उठते बैठते खाते पीते नाम जपे जो उसका। एक दिन वो बन जाता हकीकत में यार उसका॥
नाम जपे और सेवा करे वो ही भागवान। गुरूचरणों की करे बन्दगी तो मिलें पुरख पुराण॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते कर पैदा दिल में प्यार। तेरी चौखट पे खड़ा सच्चा सिरजनहार॥

ऋषि आत्माऐं

तुम भी अपने इस शरीर में जाओ सुभा होने वाली है जाओ तुम फिर से इन्सान बन जाओ वास्तविक शांति एंकात वास में है मुझे तुम्हारे साथ। जो मेरा चाहने वाला है प्रभ जब मैं अकेली होती हूँ वो मेरे साथ होता है। उसके प्रेम के बराबर संसार में मैंने किसी दूसरी वस्तु को नहीं पाया इस प्रेम ने मेरे जीवन को उबड़ खाबड़ रेगिस्तान को समतल कर दिया हरियाली से भर दिया मुझे बहुत कुछ करना था जीवन में उसे प्रसन्न व संतुष्ट करने के लिए पर यदि मैं असंतुष्ट मर गई तो मैं ऐसे जीऊँगी कि अपनी सब उम्मीदें भविष्य की खत्म कर दूं उसकी खुशी के वास्ते। उस प्रभु ने मेरी हथेली पर अपना नूर रख दिया ये बताने के लिए कि वो मुझे कितना प्यार करता है ये ही नाम था मेरी खोज की मंजिल का उसका प्यार । हे मृत्यु के देवता चलो मुझे अपने नरक में ले चलो ताकि उस आग को पानी की नदी बहाकर न बुझा सके ताकि लोग भयभीत होकर परमेश्वर का नाम लेंवे और स्वर्ग के उपवनों को फूंक दूं और फूंक दूं अप्सराओं के सुन्दर मुंख ताकि उनके आकर्षण में ऋषि आत्माऐं ना फंसे। और आओ मेरे संग परमात्मा के सच्चे रास्ते पर प्रकाश करने चलो अपनी आत्मा के चराग को मैं वहाँ हमेशा के लिए रख दूं ताकि सदा सदा युगों तक उस प्रभु के महल की तरफ जाने वाले ठोकरें न खावें।

ओ मेरे प्रभु ! मेरे पास दो रास्ते हैं तुम्हें प्यार करने के एक तो वो जो मुझे अच्छा लगता है और दूसरा वो जो तुझको अच्छा लगता है और तुम्हारे द्वारा जो प्रशंसित है। जो स्वारथ से भरा मेरे मन का रास्ता उसमें मैं सिर्फ तुम्हें जानती हूँ और जो दूसरा प्यार है तुम आत्मा को उपर उठाते हो ऊपर उठने में कष्ट होता है वह है दूसरों की सेवा का रास्ता उसमें अपने अभिमान को नष्ट करना होता है मेरी आँखें सिर्फ तुम पर टिकी रहें मैं सिर्फ तुम्हें देखा करूँ। ओ मेरे प्रभु ! मेरा नफस यानी मेर काम क्रोध आग बन कर मेरे सर पे बरसते रहते हैं और अपनी कमी की तोहमत मै। दूसरों पर धरता रहता हूँ मुझे माफ कर मेरे सच्चे परमात्मा रोशनी की सलाई मेरी आँखों में फिरा दे जिससे बिना गिरे मैं चल सकूं ।

सतगुरू की सेवा करे करे वृद्धों का सतकार। वो नर पावे अमर फल खुश होवे करतार॥
माँ और बाप को खुश रखे पावे वृद्धों का आसीस। कभी गैर के सामने झुके ना उसका सीस॥
जो वृद्धों की सेवा करे वो आत्मा में रोशनी पावे। सुख पावे संसार में धाम प्रभ का पावे॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते जैसे तू करम करेगा। आज नहीं तो कल रब तेरा इन्साफ करेगा॥

वृद्धों के लिये सुनहरा अवसर

वृद्ध पुरूष तथा वृद्ध माताऐं जो परेशान हैं
उनके लिये गुरूदरबार फुलसन्दा में
रहने की, खाने की, दवाइयों की,
निशुल्क व्यवस्था है !
गुरू महाराज कहते हैं-
कोई भी वृद्धपुरूष हमारे छेत्र में
अपने को अकेला और दुखी ना समझें
वो यहाँ गुरूदरबार में आवें
परमेश्वर का नाम जपें
निशुल्क सेवायें और अपने परिवार जैसा प्यार
यहाँ प्राप्त करें तथा आजीवन यानी हमेशा
यहाँ आकर हमारे साथ रहें ,
कम से कम कोई भी दुखी होके ना मरे ...!

गाहे किह दिलम हिसाबे किरदार कुनद - अपने करम देखकर मेरा दिल अफसोस से भरा है ।

हमारे उद्देश्य

1– हमारा उद्देश्य है एक ईश्वर की आराधना के जरिये अपने बिखरे समाज को संगठित करना

2–जातपात को ना मानना, हम देवताओं के पुत्र हैं इस बात का प्रचार करना और अपने नाम के साथ देवपुत्र लिखें। उपेक्षित दुखी बीमार वृद्धों की सेवा करना, उनकी जीवन शक्ति और उत्साह को बढ़ाना, नवयुवकों से हमारा कहना है कि वे अपने वृद्धों की उपेक्षा ना करें ।

3–जो शराब पीने वाले हैं उन्हें हम कहते हैं– शराब ना पियें, बीड़ी ना पियें किसी तरह का नशा ना करें लड़ाई झगड़े और मुकदमों में पड़कर अपना जीवन अपना वक्त और अपना धन बरबाद ना करें।

4–नवयुवकों और उनके अभिभावकों से हमारा कहना है कि– वे दहेज के लोभ में ना पड़ें, और अपने घर में देखें कि हमारे बच्चों में क्या बुराई है उसे दूर करने की कोशिश करें ।

5–अपने जानवरों को कसाई के हाथ में ना देवें ।

6–अपने कमजोर पड़ौसी को ना सतावें, कमजोर भाई को ना सतावें, कमजोर पत्नि, कमजोर संतान, कमजोर कर्मचारी, कमजोर ससुराल वालों पे अत्याचार ना करें ।

7–बीमारों कमजोरों और लाचार व्यक्तियों की मदद करने के लिये हर वक्त तैयार रहें ।

8–हमारे राष्ट्र पर अगर कोई संकट आता है तो उसके लिये अपना धन और जीवन कुरबान करने के लिये तैयार रहें, देश के दुश्मनों से डटके मुकाबला करें, उनसे बचने या दुबकने का रास्ता ना खोजें, शेर के सामने और भयानक जहरीले नाग के सामने अगर तुम सीना तान के खड़े हो जाओगे तो तुम उसे मारकर गिरा दोगे, अगर लड़ने से पहले ही घबरा जाओगे तो बिना लड़े ही तुम हार जाओगे, पाप आत्माओं में कुछ बल नहीं होता, और तुम्हारे साथ धर्म आचरण का बल है, परमेश्वर तुम्हारा मददगार है, सो डरो नहीं और आगे बढ़ो तथा जगत में धर्म की रोशनी को आगे ले जाओ।

9–अपने समाज को संगठित करो, सच्चाई और ईमानदारी से धन कमाओ, अपने घर को तपोवन जैसा पवित्र और उच्च संस्कारों से परिपूर्ण बनाओ, रोज पहले स्नान करो, रोज परमेश्वर की आराधना करो, रोज गुरूबचनों का और वेद की दो ऋचाओं का ध्यान पूर्वक पाठ करो, उन्हें समझो, रोज दान का एक हिस्सा निकाल कर रखो, जो राष्ट्र पर यदि कोई संकट आता है तो उस वक्त वह धन काम आवेगा या साध संगत की सेवा में काम आवेगा, जो माँगने वाले बीड़ी शराब पीते हों उन्हें कभी भी दान आदि नहीं देना चाहिये, अन्यथा देने वाला भी उनके पाप करम में शामिल माना जाता है ।

10–गर्भ में ही कन्याओं की हत्या कराना पाप है, ऐसा ना करो, संसार में जो भी जीव आता है उसका इन्तजाम परमेश्वर करता है, ना कि मनुष्य। अपनी जनसंख्या को घटाओ नही, बढ़ओ, नहीं तो देश के दुश्मन जनसंख्या के आधार पर हमारे देश को हम से छीन लेंगे, उन्होंने पहले भी ऐसे ही किया था। जात पात के नाम पर आपस में कमजोर ना बनो, मिलकर रहो, संगठित होके रहो ।

11–महीने के पहले रविवार को आप गुरूदरबार में अवश्य आवें, महीने में कम से कम एक रविवार गुरूर्दशन और प्रवचन सुनने का समय अवश्य निश्चित करें, उससे तुम्हें शान्ति और आत्मा में शक्ति प्राप्त होगी, आपसी मेलजोल बढ़ेगा, और तुम्हारी आत्मिक उन्नति के साथ ही सामाजिक उन्नति भी होगी, अपनी रक्षा के लिये खुद ही तैयार रहें, अस्त्र शस्त्र रखें और संकट के समय अपनी और दूसरों की रक्षा करें, ये ना सोचें कि तुम्हें बचाने आसमान से नीले घोड़े पर सवार होके कोई आवेगा, खुद ही समर्थवान बनो, बहादुर बनो, आत्मा से तपसी और शरीर से सैनिक की तरह बनो, तप और वीरता हमें अपने पुरखों से मिली है, उसे आगे तक बढ़ाओ, अपने देश पर सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहो ।

12–मेरे राष्ट्र का हर एक व्यक्ति आत्मा से तपस्वी और शरीर से एक मजबूत सैनिक बने, जो अपने धर्म की अपने राष्ट्र की सेवा कर सके रक्षा कर सके। अपने सत संकल्प और धर्म पर अडिग रहो, आत्मा में कमजोर ना बनो, परमेश्वर हमारे साथ है, उसकी मदद हमारे साथ है ।

सतसंग

अराधना का समय शाम पांच बजे

चुप रह और दिल ही दिल में जप उस प्रभ का नाम। धीरज धर अपने मन में बन जावेंगे सब काम॥

दिसम्बर

4.ग्रा—गढ़ीबान,पो—अकबराबाद,जि—बिजनौर,आयोजक— मगन सिहँ पुत्र श्री धनीराम सिहँ, मो—9761145804

5. ग्रा—नंगला जोगराज,पो—कुरी रवाना,जि—मुरादाबाद, आयोजक—नरेश कुमार,मो—7417638494,8445049006

6. ग्रा—कालुपुर,पो—बिसौली,जि—बदाँयू,समय 2 बजे से, आयोजक—समस्त सतसंगीगण,मो—9758963772, 9557346716

10.दोपहर—1बजेसे,गीताभवन ललतारापुल हरिद्वार,आयोजक अमरनाथ मदानमो—9456784022

12,13. सेठ मुरारी लाल की धर्मशाला गाँधी रोड़ खुर्जा,जि—बुलन्दशहर,समय—साँय—3 बजे से,आयोजक समस्त सतसंगी गण,मो—9258547400,7417277227

19. दिव्य विशाल शोभा यात्रा मुरादाबाद समय—11 बजे से 20,21,22. सतसंग कम्पनी बाग मुरादाबाद,समय—2 बजे सेआयोजक—समस्त सतसंगी गण,मो—9897362675,9412530450 9411811521,8958454444

25. ग्रा व पो—भटियाना खुशहालपुर,जि—बिजनौर, आयोजक—श्री अरविन्द कुमार,मो—9756634069,

28,29.सामुदायिक केन्द्र नियर सहारा स्टेट जानकीपुरम,लखनऊ, समय—सांय 3 बजे से आयोजक निशान्त नीलम राजेश राजवंशी

अपने यहाँ माइक से आराधना करें गाँव गाँव में धर्म का प्रकाश करें सप्ताह में एक दिन सब सतसंगी मिलकर कभी किसी के घर तो कभी किसी के घर आराधना करें आपस में प्रेम को बढ़ावें तकरार करना अहंकार करना शैतान का काम है ऐसा ना करें । जब चार आदमी परमेश्वर का नाम लेने के लिये एक जगहा पर इकट्ठे होते हैं तब शैतान को ये बात अच्छी नहीं लगती और वह तुम्हारे बीच एक ऐसा आदमी बनकर आता है जो तुम्हारे बीच तकरार अहंकार फसाद और झगड़े की बातें उठाता है बस समझ लेना ये ही है परमात्मा की राह में चलने वालों का दुश्मन जो तुमको परमेश्वर की तरफ जाने से रोकता है ।उन लोगों से सावधान रहना जो झूठ बोलते हैं मकर मिलाते हैं ओर तुमको परमेश्वर की राह से हटाने की योजना बनाते हैं ।

जनवरी

1 ग्राम जसमौरा निकट मिर्जापुर पो नहटौर जि बिजनौर आयोजक श्री छोटे सिंह फोन—9568551213

5 बृजमोहन अग्रवाल धर्मशाला, पटपड़ गंज दिल्ली—91,मो—09412493683, 09810628650.

9,10,11,परमसुन्दर सतसंगभवन किशनपुरा सहारनपुर समय दोपहर 2 बजे आयोजक अशोकशर्मा भावना शर्मा मो 9927202323,9359902824,

16 ग्रा खण्डसाल जुन्नारदार पो हादरपुर जि मुरादाबाद आयोजक मास्टर कृपाल सिंह समय दोपहर 1 बजे मो 9719912849,9458523107,

22 ग्रा बनी पो हरगनपुर जि बिजनौर आयोजक सोमपाल सिंह पुत्र श्री नेतराम सिंह मो 9458515739

29 ग्रा पो लक्खुवाला जि बिजनौर आयोजक श्री सुरेश त्यागी मो 9411229154

30,31,रामलली धरमशाला पुरैना रोड आंवला जि बरेली आयोजक श्री संजीव गुप्ता लाल कोठी वाले समय दोपहर 3 बजे मो 9927130488,9837358105,

तुम्हारा जीवन पवित्र होवे ।
तुम्हारे बचन पवित्र होवें ।
तुम्हारा चरित्र पवित्र होवे ।
तुम्हारे विचार पवित्र होवें ।
तुम्हारा रहन सहन पवित्र होवे ।
तुम्हारा खानपीन पवित्र होवे ।
तुम्हारा व्यवहार पवित्र होवे ।
तुम्हारा मन और आत्मा पवित्र होवे ।

कृपया मातायें सतसंग में जेवर गहने पहन कर ना आया करें।

पत्रिका के सदस्य अपना वार्षिक सदस्यता शुल्क 180 रू. जमा कराने की कृपा करें व नये सदस्य भी बनावें जिनके यहाँ पत्रिका किसी कारण से नहीं पहुँच पा रही हैं वे आश्रम में सूचित करें जिससे उनको पत्रिका भेजी जा सके ...।

गुरूमहाराज से जगहा जगहा प्रार्थना पढ़ने का आग्रह ना करें ।

सुमरो पल पल सच्चा साजन नूर भरे दिल वालो। गया बखत फिर हाथ ना आवे अ रोशन दिल वालो ॥
प्यार भरे होटों पे जब आता है उसका नाम। नाचने लगते फ़रिश्ते झूमता आसमान॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते प्रभ तो रहे सदा साथ। जहां भी मैं फिरूं छोड़े नहीं मेरा हाथ॥

नया कुत्ता

तूने नूर से तो रचा जहान फिर क्यों मेरे भीतर आग है । मुझे फूंक दे या गुलज़ार कर सब कुछ तेरे हाथ है ।।
अंधयारे में एक लहर तेरा नाम चीखती फिरती है । ना रूई ना बत्ती ना तेल सूरज तेरा जलाया चिराग़ है ।।

नहीं किसी से मिलने को करता दिल महबूब तेरे सिवा । हर बात दुनियां की बुरी लगे ना जाने क्या बात है
जो दिया जलाया है तुमने मेरे जिसम के रोशनदान में । सदियां गुज़र गईं वो रोशनी आज भी मेरे साथ है ।।

ये सितारों की गर्दिशें ये बनना बिगड़ना दुनियां का । तेरे दिल से उपजा ख़याल है तेरी आँख में बहता ख़्वाब है
जो है हवस हिरस के हाथ में वो ज़िन्दा नहीं मुर्दा हैं । तूने जिसे अपना बना लिया वो हर बोझ से आज़ाद है ।।

शुरू है तेरे नाम पे और ख़त्म तेरे नाम पे । तूने जिसको लिखा है बिना कलम दुनियां ऐसी किताब है ।।
मुझे अपने आशिकों में मिला अपने हुस्न का शर्बत पिला । जाने किसको देवे तू भरके सुराही तेरे हाथ है ।।

मुझे ग़म मिले या दर्द मिले इसका नहीं मलाल कुछ । पर देख मेरी आँखों में तेरा ही हुस्न तेरा शबाब है ।।
मैने दिल को अपने धोया बहुत रूह को धोया बहुत । मैं कैसे कहूं कि दिल मेरा मेरी जान बेदाग़ है ।।

तेरे देखने में फ़र्क है मेरे देखने में फ़र्क है । मैं जिस्म की बंदिश में हूँ तू आसमां का चिराग़ है ।।
सुन मेरे जंगली सनम तूने तमाशे दिखाये बहुत । मेरी हस्ती का तम्बू उखाड़ दे मुझे तुझसे मिलने की आस है
फुलसन्दे वाले बाबा सुनो कहने से कौन समझा है कब । वर्ना ज़रा सी बात में सारी खुदाई का राज़ है ।।

यार तो है सामने पर वस्ल नहीं तकदीर में । अ मेरे पीर बता कब तक जियूं इस पीर में ।।
नये नये आशिक को रोकते हैं आशिक पुराने । जैसे नये कुत्ते को खदेड़ते हैं कुत्ते पुराने ।।

जब नया पुरानो के बड़प्पन के आगे पूँछ हिलाता है । तो उनकी मेहेरबानी का हिस्सा और मेहमानी को पाता है
उन्हीं पुरानो में से कोई उसका दोस्त फिर बन जाता है । और एक दिन महबूब की खिड़की के तले ले जाता है

महबूब की नज़र पड़ते ही चमकता है वो कालू इस तरहा । काला पत्थर धूप में चमके जैसे सोने की तरहा ।।
नया साधक शुरू में जब जपता है उस प्रभ का नाम । रोकते हैं उसे आसमान वाले और धरती के भी इन्सान ।।

दुनियां के लोग तरहा तरहा के जख़्म देते हैं उसे । यानी सच की राह से हर तरहा हटाते हैं उसे ।।
बाद में सच्चा गुरू लेजाता उसका हाथ पकड़के । दुनियांदार भी पाते पनाह फिर दामन में उसके ।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहें दामन पकड़ कसके गुरू का । जो तू महबूब बनना चाहे उस सच्चे महबूब का ।।

कुछ बिगड़े हुए सतसंगी जो अब गुरूदरबार में नहीं रहते वे सतसंगियों के घर जाके झूठे बहाने बनाके झूठ बोलके उनसे मोटी रकम ठग लेते हैं ऐसे कई वाकये सामने आये हैं इस लिये आप सतसंगियों को गुरूदेव की तरफ से सूचित किया जाता है ऐसे घटिया लोगों से वास्ता ना रखें और ना उनको धन देवें तुरन्त फोन करके गुरूदरबार को सूचना देवें।